सफलता के आठ वर्ष

वर्ष 8, अंक 03 इलाहाबाद दिसम्बर 2008

विश्व स्नेह समाज

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

जरुरत है एक जनआंदोलन की

कीमत 5 रुपये

आतंकवादियों के खिलाफ कठोर कदम उठाने होगें

साहित्य मेला २००९

दिनांकः १४ फरवरी २००६ दिनः शनिवार **समयः** प्रातः ११ बजे

पुस्तक प्रर्दशनी का उद्घाटन एवं अवलोकन

सायंः ५ बजे काव्य संध्या

15 फरवरी 2009 दिन रविवारः

प्रातः 9 बजे साहित्य मेले का उद्घाटन
परिचर्चाः वर्तमान परिवेश में साहित्यकारों की भूमिका
बाल्य काव्य प्रतियोगिता

अपरान्ह 2 बजे

राष्ट्रीय हिंदी मासिक **'विश्व स्नेह समाज'** के १००वें अक का विमोचन
एवं
राष्ट्र स्तरीय सम्मान समारोह

विशेषः परिचर्चा में भाग लेने के लिए अपना आलेख १५ जनवरी २००६ के पूर्व कार्यालय को प्रेषित करें. बाद में परिचर्चा में शामिल नहीं किया जाएगा. एक वक्ता को अधिकतम १० मिनट का समय दिया जाएगा. कुल पॉच वक्ताओं को हीं परिचर्चा में शामिल किया जाएगा. सर्वश्रेष्ठ आलेख को सम्मानित किया जाएगा. काव्य संध्या के लिए भी अपना नाम पूर्व में भेज देवे. सर्वश्रेष्ठ तीन कवियों को भी सम्मानित किया जाएगा.

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान
एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
email: sahityaseva@rediffmail.com Mo.: 09335155949

पत्र/पत्रिकाएं एवं पुस्तकें आमंत्रित

साहित्य मेला ०६ के अवसर इस वर्ष दो दिवसीय पत्र/पत्रिका एवं पुस्तक प्रर्दशनी आयोजित की जा रही है. जिसमें सम्पूर्ण भारत से करीब ५०० पत्र/पत्रिकाएं एवं करीब पॉच हजार पुस्तकों को विक्रय/प्रदर्शन के लिए रक्खे जाने की सम्भावना है. इस पुस्तक प्रदर्शनी हेतु देश/विदेश के संपादको/लेखकों/प्रकाशकों से पत्र/पत्रिकाएं/पुस्तकें आमंत्रित है. पाठकों द्वारा सर्वाधिक प्रशंसित पुस्तक को सम्मानित किया जायेगा एवं पांच अन्य श्रेष्ठ प्रशंसनीय पुस्तकों को प्रमाण पत्र प्रदान किया जायेगा. कृपया अपनी पुस्तकें ३० जनवरी ०६ के पूर्व कार्यालय को प्रेषित कर देवें.

किसी अन्य प्रकार की जानकारी के लिए कार्यालय के पते पर लिखेंः

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्षः८ अंकः३दिसम्बर ०८, इलाहाबाद

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
डी.पी.उपाध्याय, बलिया

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

एक प्रतिः रु०५/–
वार्षिकः रु० ६०/–
विशिष्ठ सदस्यःरु० १००/–
द्विवार्षिकसदस्यःरु०११०/–
पाच वर्ष–रु०२ ६०/–
आजीवन सदस्यः रु०१००१/–
संरक्षक सदस्य :रु० २५००/–

अंदर के पन्नों में:

राष्ट्रीय नेतृत्व का संकट 07

पर्यावरण जागरुकता में मीडिया का महत्व 11

सामाजिक संगठन एवं कार्यकर्ता 15

राज ठाकरे का आतंकवाद १८

टीपू ने किया था रॉकेट का आविष्कार ३२

अपनी बात	-	०४
प्रेरक प्रसंग	-	०६
हर कानून को धुएं में उड़ाता चला गया		१०
बैंक अफसरों को सता रहा जाली नोट का भूत		१०
कहॉनी-भीलड़ रेशमा	-	१२
व्यक्तित्व	-	२२
अध्यात्मः		
संकीर्तन प्रेमी संत महात्मा भोली बाबा		२३
मुर्दो की आंख का भी कारोबार		१६
कहॉनीः हथौड़ी-		१७
कहॉनीः दिलेर दर्जी		२०
स्नेहबाल मंच-		२५
कविताएं-		१३,१४, १७, २०, २१,२६
साहित्य समाचार-		२१,२४,२७,२८
स्वास्थ्य-		२८
चिट्ठी आई है-		२६
लघु कथाएं-		३१
हंसना मना है-		३२
पुस्तक समीक्षा-		३३

अपनी बात

आतंकवादियों के खिलाफ कठोर कदम उठाने होगें

हम अंग्रेजों के खिलाफ आजादी की अहिंसात्मक लड़ाई की जीत को वर्तमान समय में भी ढो रहे है. हम आज भी हर लड़ाई को शांति व अहिंसा से जीतना चाहते है. या दूसरे शब्दों में यह कहें कि हमारे जननेता गांधी जी के अहिंसा के सिद्धात को, अपनी मक्कारी, कायरता को छुपाने के लिए इस्तेमाल कर रहे है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी. चाहें वह कारगिल की लड़ाई हो, संसद पर हमला हो या मुंबई का यह ताजा तरीन भयानक, विभत्स हादसा. जब भी इस तरह की आतंकी घटनाएं होती है, हमारे सत्ता के लालची नेता हम साथ-साथ है, आप लोग धैर्य रक्खें, हम आतंकवादियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही करेंगे कहकर फिर वहीं राग अलापने लगते है. एक विशेष सम्प्रदाय के वोट की लालच में सख्त कार्यवाही करने से डरते है, यह किसी एक पार्टी की बात नहीं है, यह कांग्रेस, अपने को राष्ट्रवादी कहने वाली भारतीय जनता पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, समाजवादी पार्टी, जनता दल यूनाइटेड या अन्य कोई भी दल हो सबका यही हाल है. बटला कांड में शहीद हुए दिवान की शहादत को हमारे अमर सिंह जैसे कुछ नेता आतंककियों के घर सहानुभूति प्रकट करने पहुँच जाते है, आतंकियो के मारे जाने की न्यायायिक जांच की मांग करने लगते है, पाकिस्तान के खिलाफ कुछ बोलने में शर्माते है. जैसे कुछ बोल देंगे तो उनकी जान चली जाएगी. क्या यह बात किसी से छिपी हुई है कि आतंकवादी चाहे वह किसी जाति/धर्म/सम्प्रदाय का हो वह मारते समय, बम ब्लास्ट करते समय किसी की जाति/धर्म को नहीं पूछता. रमजान के पाक महीने में आतंक फैलाने वाला क्या सच्चा मुसलमान है. मुंबई कांड में ही एक मुस्लिम महिला जो दहाड़े मार-मारकर अल्लाह की गुहार इसलिए लगा रही थी कि उसका पति, उसके बच्चे, उसकी ननद, दामाद सबके के सब शिवाजी टर्मिनल पर आतंक के शिकार हो गये थे. क्या मुस्लिम भाईयों को नहीं मालुम कि ये नेता बटला कांड की न्यायिक जांच की मांग सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए कर रहे है. देश का, समाज का सच्चा हितैशी वह है जो गलत को गलत कहें, उसके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाही करने की मांग करें, उसे किसी सम्प्रदाय, जाति विशेष के चस्में से न देखे. आतंकवादी आतंकवादी है, उसके खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही की ही जाने चाहिए बिना किसी भेदभाव के.

हमारे देश की खुफिया एजेंसिया, सरकारें घटनाओं के घटित हो जाने के बाद एक दूसरें पर दोष मढ़ कर अपना पल्ला झारने का प्रयास करती है. हमने तो राज्य सरकार को एक माह पूर्व ही सुचना दे दी थी. अरे क्या सुचना देकर तुम्हारे कर्तव्य की इतिश्री हो गई. हमारे कायर नेता कहते है तुम्हारे शासन काल में ३००० आतंकी घटनाएं हुई, हमारे काल में ७०. जैसे आतंकी घटना होना इनके सुशासन का प्रमाण हो. अगर ऐसे ही हम सोते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब नेताओं व अमीरों के परिवार विदेशों में जाकर रहेगें सुरक्षा के लिए और हमारो देश के बुझदिल नेता विदेशों में रहकर मोबाइल व नेट से शासन चलाएगे, और गरीब जनता आतंकियों द्वारा घास फुस की तरह काटी जाती रहेगी. हमें इस्राइल से सीख लेनी चाहिए. जहां की सरकार ने आतंकवादी वारदातों से निपटने के लिए पुख्ता इंतजाम किए है. उसकी खुफिया एंजेसी मोसाद दुनिया की सबसे चौकस खुफिया एजेंसियो में गिनी जाती है. वहां का हर नागरिक चौकस है. कहीं भी आशंका होने पर तुरंत पुलिस को खबर करती हे. अमेरिका को लीजिए जिसने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हुए आतंकी हमले के बाद अपनी आतंरिक सुरक्षा को मजबूत करने के साथ ही साथ कड़े कानून पारित किए, खुफिया एजेंसियों को और चाक चौबन्द किया. टेररिस्ट एक्सक्ल्यूजन सूची बनाई फॉरेन इमरजेंसी सपोर्ट टीम और डोमेस्टिक इमरजेंसी सपोट टीम का गठन किया. सीआईए की एक शाखा केवल डीसीआई कांउटर टेररिस्ट सेंटर बनाई जो केवल आतंकवाद से जुड़े मामले को ही देखती है. पाकिस्तान की सीमा में घुस कर अलकायदा पर हमला कर रही है. और हम हाथ पर हाथ धरे बैठते रहते है. बस वही लकीर फकीर पिटते रहते है.

आम जनता को भी जागरुक होना पड़ेगा, उन्हें कहीं भी कोई सदिग्ध व्यक्ति, वस्तु दिखाई दे तो तुरंत पुलिस को १०० नंबर पर सूचित करें. अगर संभव हो तो निकटम थाने में सूचना दें. हालांकि हमारी पुलिस भी सोती ही रहती है लेकिन कुछ प्रतिशत तो प्रभाव पड़ेगा ही. हमें अपने देश के इन कायर जननेताओं के खिलाफ आंदोलन चलाना होगा, इनसे चुनाव के समय जबाब मांगना होगा कि क्या किया? क्यों आपको वोट दें. तुम्हें कुर्सी चिपके रहने के लिए यह घिनौना खेल नहीं खेलने देगें. अगर हमें सुरक्षा नहीं दे सकते, और अपनी सुरक्षा में करोड़ों, अरबों रुपये पानी की तरह बहाते हो, आखिर किसलिए?

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

पत्रिका के आठ वर्ष पूरे होने पर हार्दिक बधाईयां

डॉ० (श्रीमती) तारा सिंह

निदेशक, स्वर्ग विभा
बी-६०५, अनमोल प्लाजा,
प्लॉट-७, सेक्टर-८, खारघर, नवी मुम्बई-४१०२१०
मो०सं०: ०९९६७३६२०८७

श्री दुर्गा प्रसाद उपाध्याय 'मगन मनिजी'

वरिष्ठ प्रबंधक (अभियांत्रिकी) नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली इलाहाबाद
मो०सं०: ०९४५०४०८३४०

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव

एडवोकेट, जनपद न्यायालय, कार्यसमिति सदस्य(महिला शाखा): विश्व हिदी साहित्य सेवा संस्थान

निवासः 5/6,शिवकुटी,
तेलियरगंज, इलाहाबाद,
मो.: 9936834672

कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव

संयुक्त सचिव-युवा शाखा,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान/लेखक
५/६, शिवकुटी, तेलियरगंज,
इलाहाबाद, उ०प्र०
मो०सं०: ०९९३६८३४६७२

With Compliment From

PAWITRA COMPUTER'S

Supplier & sellor of all kinds of computer peripheral's shop, software & Hardware Training Centre

Cont.: 09335158956

ज्ञानेन्द्र सिंह

एडवोकेट-हाईकोर्ट,
आजीवन सदस्य-विश्व स्नेह समाज
संपर्कः ग्राम-कुखुदी, पो० बामपुर, इलाहाबाद, उ०प्र०
मो०:९९३५६८१७३६

With Compliment From

M-TECH

[Computer Education Centre]

All kinds of software & Hardware Training Centre

Cont.: L.I.G-93, Neem Sarai Colony, Mundera, Allahabad-211011 Mo.:9335155949

With Compliment From

F.C.L.C

[Future Computer Learning Centre]

All kinds of software & Hardware Training Centre

Sipah, Near Masjid, Jaunpur, U.P

प्रेरक प्रसंग

स्तम्भः क्या करें, क्या न करें

गुरु-शिष्य परम्पराः

गुरु-शिष्य सम्बन्ध अब उतना अच्छा नहीं रह पा रहा है. बात-बात पर विचारों में मतभेद तो है ही, और भी दुखदायी प्रसंग हो जाते है. कहते है कि जिस विद्यालय में गुरु का सम्मान नहीं होता वह विद्यालय कभी पनपता नहीं है. सम्भवतः यही कारण है कि विद्या का स्तर क्रमशः घटता जा रहा है. आज के तकनीकी युग में नई पीढ़ी भूल जाती है कि अनुभव के बिना हर शिक्षा अधूरी है. ऐसे में मार्गदर्शन हेतु गुरु का रहना अत्यन्त आवश्यक है. एक हद तक गुरू भी इस दर्दनाक स्थिति के लिए जिम्मेदार है. गुरु को अपना एक आदर्श स्थापित करना पड़ता है. एक निष्कलंक और साफ प्रवृत्ति का गुरु सदैव सम्मान पायेगा. अर्थ एक बहुत बड़ी समस्या हो गई है. उसका वेतनमान इतना तो हो कि वह शिक्षा को व्यापार का रुप देने की न सोचे. शिक्षा अपने आप में एक व्यापार होता जा रहा है. क्या एक दिन यही सत्य होगा कि धनवानों को गरीबों के मुकाबले अधिक और ऊँची शिक्षा मिलेगी? तब योग्यता, क्षमता, निपुणता और प्रतिभा का क्या मोल रह जायेगा? आवश्यक है कि गुरु और शिष्य के बीच पिता-पुत्र जैसी बात हो. शिष्य खुलकर गुरु से अपने समस्याओं की बात कह सके और गुरु बदले में उसकी समस्या का निराकरण कर सके. शिक्षा को राजनीति से दूर रखा जाये और उसी की उन्नति हो जो इसके लायक हो तो आदर्श स्थापित हो सकते हैं. अन्यथा गुरु-शिष्य सम्बन्ध कडुवाहट लिए हुए रहेंगे. मिठास का लाना अति आवश्यक है अन्यथा शिक्षा स्थलों की इमारतें ही रह जायेंगी और अन्दर सब कुछ खोखला होगा.

डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

+++++++++++++++++++++++++++

पीछे न धकेलो, स्वयं आगे बढ़ो

स्वामी रामतीर्थ सन्यास लेने के पूर्व तीर्थराम थे और लाहौर के एक महाविद्यालय में गणित के प्राध्यापक थे. एक बार श्यामपट पर उन्होंने एक रेखा खींचकर विद्यार्थियों से पूछा कि, क्या कोई इस रेखा को मिटाये बिना छोटी कर सकता है? कक्षा चुप रही. एक विद्यार्थी ने उठकर उस रेखा के पास एक बड़ी रेखा खींच दी जिससे पहली रेखा छोटी हो गयी. प्राध्यापक तीर्थराम बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे जीवन का भी यही रहस्य है. यदि तुम बड़े बनना चाहते हो तो बड़े बन जाने वाले व्यक्तियों को पीछे मत धकेलो, अपने आपको उनसे बड़ा बनाओं. वे तुमसे छोटे हो जायेंगें.

++++++++++++++++++++++++++++++++

धर्म कहता है

धर्म कहता है कि अपनों की सेवा में रत जीवन ही श्रेष्ठतम है. स्वामी विवेकानन्द के उदार थे, श्रेष्ठतम सत्य यह है, ईश्वर सर्वव्यापी है. सभी उसके भिन्न-भिन्न स्वरुप मात्र है. किसी अन्य ईश्वर की खोज व्यर्थ है. अपने चारों ओर रहने वालों की पूजा-सेवा सर्वश्रेष्ठ पूजा है. नर की सेवा ही नारायण की सच्ची पूजा है.

डॉ. बी.एल.टेकड़ीवाल, मुंबई

++++++++++++++++++++++++++++++++

कुछ अनमोल वचन

जब सामाजिक काम को, चिन्ता रहे सवार।
नहीं करे नुकसान यह, तन को किसी प्रकार।।
जो धन घर में ला रहा, उसका रहता मान।
जो बैठा घर खा रहा, घटे मान ले जान।।
खून लगे जब खौलने, छोटी छोटी बात।
समझ समझ की है कमी, दिन बन जाता रात।।
जो सच्चा पुरुषार्थी, हो कर्तव्य सवार।
बिना काम का जो रहे, वह मॉगे अधिकार।।
जाति धर्म मत पूछिये, पूछो उसका ज्ञान।
बातचीत से समझिये, कैसा वह इनसान।।
पानी ही हर बूंद का, लोग रखें जब ध्यान।
तब धरती पर जिन्दगी, हो सकती आसान।।
जीवन में हर व्यक्ति के, कुछ रहती तकलीफ।
बिना कहे जो सह रहा, मानो व्यक्ति शरीफ।।

अमरेन्द्र बहादुर सिंह, चित्तौड़गढ़, राजस्थान

मुद्दा

राष्ट्रीय नेतृत्व का संकट

- राष्ट्र के शिखर नेतृत्व की नीयत साफ नहीं है
- भारतीय जनता पार्टी तो सदैव मुखौटों की राजनीति से ही ग्रस्त दिखती है
- अन्य राजनैतिक दल क्षेत्रवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद जैसी भावनाओं के सहारे येन-केन-प्रकारेण सत्ता हासिल करते हैं और विकास की बातों को पीछे छोड़ देते है.

✍राम शिव मूर्ति यादव,
आजमगढ़, उ०प्र०

बड़े अफसोस की बात है कि राष्ट्र आज जिस संकट की घड़ी से गुजर रहा है, उसके प्रति न तो राष्ट्र का नेतृत्व, न साहित्यकार, न मीडिया और न ही बुद्धिजीवी संवेदनशील है. लगता है सभी संवेदनहीन हो चुके है, शून्य हो चुके है. देश मे बड़े से बड़ा हादसा हो जाता है, क्षण भर के लिए रेडियों व टी.वी. अपनी जानी-पहचानी आवाज में उसे खबरों का रूप दे देते है, अखबार वाले अपने पन्ने रंग देते है, फिर आया-गया हो जाता है. लोग बाग भूल जाते है,कारण कि इस देश की जनता का भुलक्कड़पन पुराना है. यद्यपि कि इसमें जनता का दोष नहीं, बल्कि दोष तो राष्ट्रीय कर्णधारों का है, जिन्होंने समाज का माहौल और संस्कार ही ऐसा निर्मित कर दिया है कि इसके सिवा कुछ नहीं हो सकता.

दरअसल राष्ट्र के शिखर नेतृत्व की नीयत साफ नहीं है या यूं कहे कि आज का नेतृत्व राष्ट्र के प्रति समर्पित न होकर, राष्ट्र को ही अपने प्रति समर्पित मान लेता है. यही कारण है कि नेतृत्व पर आया संकट राष्ट्र का संकट मान लिया जाता है एवं नेतृत्व का हित राष्ट्र का हित मान लिया जाता है. ऐसे में जब देश के सभी बड़े राजनैतिक दल खुद ही नेतृत्व को लेकर संकट में है, उनसे सक्षम नेतृत्व की आशा करना ही व्यर्थ है. देश पर सबसे लम्बे समय तक शासन करने वाली कांग्रेस पार्टी का हाल देखें तो स्वयं महात्मा गांधी ने आजादी पश्चात कांग्रेस को भंग करने की बात कही थी क्योंकि उन्हें आजादी के बाद की भारत की तस्वीर दिखने लगी थी. यह अनायास ही नहीं है कि कांग्रेस मात्र एक परिवार विशेष के व्यक्तियों के भरोसे रह गई है और अपनी स्थाई नियति मानकर उनसे ही किसी करिश्में की आशा करती है. कभी स्वतन्त्रता आन्दोलन का पर्याय रहे कांग्रेस की यह मनोदशा स्वयं में बहुत कुछ स्पष्ट कर देती है. उत्तर प्रदेश जैसे सशक्त राज्य में अपनी जमीन खिसकने के बाद जिस प्रकार कांग्रेस छटपटा रही है, उसे समझा जा सकता है. युवराज के रूप में प्रचारित किये जा रहे राहुल गॉधी बुन्देलखण्ड के एक दलित परिवार में रात गुजार कर इस बात की आसानी से घोषणा करते हैं कि ऊपर से चले एक रूपये में से मात्र पॉच पैसा ही इन इलाकों में पहुँचता है, पर इसके लिए जिम्मेदार कौन है बताना भूज जाते है. इसी प्रकार भारतीय जनता पार्टी तो सदैव मुखौटों की राजनीति से ही ग्रस्त दिखती है. कभी अयोध्या तो कभी गुजरात को हिन्दुत्व की प्रयोगशाला बनाने वाली भाजपा के कर्णधार सत्ता में आते ही गठबन्धन की आड़ में अपने मूल मुद्दों को दरकिनार कर देते है. ऐसे ही तमाम अन्य राजनैतिक दल क्षेत्रवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद जैसी भावनाओं के सहारे येन-केन-प्रकारेण सत्ता हासिल करते हैं और विकास की बातों को पीछे छोड़ देते है. निश्चिततः इसे उचित नहीं ठहराया जा सकता और इसी का नतीजा है कि आज अराजकता, आतंकवाद, अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार , सामाजिक असुरक्षा का दूषित माहौल पूरे राष्ट्र में व्याप्त है.

इस बिगड़े माहौल के लिये राजनैतिक नेतृत्व के साथ-साथ पूँजीपति वर्ग, धर्माचार्य व मीडिया भी अपनी जिम्मेदारी से ऑख नहीं चुरा सकते. ये आये दिन देश की जनता को राष्ट्रीयता, ईमानदारी, मितव्ययिता, अनुशासन व कर्मठता का पाठ पढ़ाते है पर कभी अपने गिरेबान में झॉकने की कोशिश नहीं करते. लोकतंत्र का चतुर्थ स्तम्भ कहा जाने वाला मीडिया इन कथित कर्णधारों द्वारा कही गई एक-एक बात को ब्रेकिंग न्यूज बनाकर देश की जनता को उबाता रहता है. टीआरपी की होड़ में टीवी चैनल क्राइम, सेक्स, ज्योतिष, हास्य और पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित धारावाहिकों को बार-बार परोस रहा है और टीवी के साथ प्रतियोगिता में अखबार भी यही सब कर रहे हैं. वस्तुतः जनता की आवाज उठाने की बजाय मीडिया की प्राथमिकता सरकारी विभागों और कारपोरेट जगत से प्राप्त विज्ञापन है, जिन पर उनकी रोजी-रोटी टिकी हुई है. रोज प्रवचन देने वाले धर्माचार्य जनता को धर्म की चाशनी खिला रहे हैं और कर्मवाद की बजाय लोगों को कर्मकाण्ड की तरफ प्रेरित करके अपना उल्लू सीधा कर रहे है.

ऐसा प्रतीत होता है कि या तो यह वर्ग यह समझकर प्रवचन झाड़ता है कि इस देश की जनता अनपढ़ और नासमझ है अथवा वे इस सूत्र पर काम कर निहित स्वार्थ एक है और दुनिया की सारी सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण इस वर्ग के पास अभाव नामक चीज फटक भी नहीं सकती. यही कारण है कि यह वर्ग यथास्थितिवाद का पुरजोर पक्षधर है. इन्हें किसी भी प्रकार का परिवर्तन पसन्द नहीं-भले ही आम जनता अकाल, भुखमरी, महामारी से त्रस्त हो, देश का शिक्षित युवा वर्ग रोजी रोटी की तलाश में बुढ़ापे को पहुँच जाये, देश की आधी से अधिक जनता गरीबी रेखा के नीचे जीवन-यापन करती रहे, भोला-भाला देहाती नौकरशाही के जाल में पिसता रहे, किन्तु इस देश के नेताओं, पूँजीपतियों व धर्माचार्यों पर इसका कोई असर नहीं पड़ता. इनका सब कुछ तो 'सिंहासन', गद्दी व आसन तक सीमित है. यही उनका राष्ट्र है, यही उनकी देशभक्ति है, बाकी चीजों के प्रति यह वर्ग अपनी संवेदनशीलता खो बैठा है. आये दिन बड़े से बड़े हादसे हो रहे हैं किन्तु यह कत्तई नहीं लगता कि शिखर नेतृत्व इन हादसों के प्रति गम्भीर व जागरुक है. कभी भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नहेरु ने कहा था कि उनका वश चले तो जमाखोरों और कालाबाजारी करने वालों को बिजली के खम्भों से लटका दें. पर भ्रष्टाचार का दौर नेहरु के समय में ही आरम्भ हो गया. उनके समय में ही १९५७ में देश का प्रथम बड़ा घोटाला हरिदास मूंदड़ा का शेयर घोटाला सामने आया. इन्दिरा गॉधी ने भ्रष्टाचार को विश्वव्यापी समस्या बताकर इसकी स्वीकार्यता स्थापित कर दी तो राजीव गॉधी यह जानकर भी १०० में से मात्र १५ पैसा अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचता है, राजनैतिक इच्छाशक्ति के अभाव में इस रोग का उपचार नहीं बता सके. महात्मा गांधी का नाम लेकर राजनीति करने वाले उनकी इच्छानुसार समाज के अन्तिम व्यक्ति के ऑसू नहीं पोछ सके और अन्ततः सारी चोट अन्तिम व्यक्ति के ही हिस्से में आयी. लुभावने नारों के साथ अन्य राजनैतिक दल जब सत्ता में आये तो भी स्थिति जस की तस रही. गरीब तबकों हेतु रोज नई योजनाएं लागू की जाती है, पर उनमें से अधिकतर कागजों में ही अपना लक्ष्य पूरा करती हैं. यही कारण है कि भ्रष्टाचार को शिष्टाचार बनने में देरी नहीं लगी. ऑकड़े गवाह है कि देश के ६२ प्रतिशत लोगों को रिश्वत देकर काम करवाने का प्रत्यक्ष अनुभव है और आम नागरिक प्रतिवर्ष करीब २१०६८ करोड़ रुपये रिश्वत देता है. वस्तुतः भ्रष्टाचार व्यक्तिगत आचरण से अब संस्थागत रूप ले चुका है. यह आम जनता का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि जब ऐसे मसलों पर बहुत शोर-शराबा होता है तो मामले को आयोग की चाहरदीवारी या न्यायिक जॉच प्रक्रिया की जंजीर से बॉध दिया जाता है और फिर तो भूलना ही भूलना है, कारण कि मामला अदालती जॉच प्रक्रिया से गुजर रहा है अतएव इस पर किसी प्रकार की टीका-टिप्पणी करना न्यायालय की अवमानना परिधि के अन्तर्गत आता है. इसी प्रकार बाढ़, सूखा, अकाल या अन्य आपदाओं के समय मंत्रीगण व अधिकारी विमान, हेलीकॉप्टर और कारों के काफिलों का प्रयोग करते हैं, नतीजन जितनी राहत पीड़ित-जनों को नहीं मिल पाती है उससे कहीं ज्यादा मंत्री व अधिकारियों पर खर्च पड़ जाता है. वस्तुतः भ्रष्टाचार के खिलाफ कदम उठाने की जिम्मेदारी जिन लोगों और संस्थाओं पर है, खुद वे भ्रष्टाचार में बुरी तरह उलझे हुए हैं. पहले के राजनेता भ्रष्टाचार में अपना नाम आने पर शरमाते थे, आज वे पूरी ताकत से अपने भ्रष्ट आचरण का बचाव करते है. हाल ही में चारा घोटाले मामले की सुनवाई के दौरान सर्वोच्च न्यायालय को भी टिप्पणी करनी पड़ी कि भ्रष्टाचारियों को लैम्पपोस्ट से लटकाकर फॉसी दे देनी चाहिए, तो

- नेताओं के लिए सब कुछ तो 'सिंहासन' तक सीमित है. यही उनका राष्ट्र है, यही उनकी देशभक्ति है
- पं. जवाहर लाल नहेरु ने कहा था कि उनका वश चले तो जमाखोरों और कालाबाजारी करने वालों को बिजली के खम्भों से लटका दें.
- गरीब तबकों हेतु रोज नई योजनाएं लागू की जाती है, पर उनमें से अधिकतर कागजों में ही अपना लक्ष्य पूरा करती हैं.
- देश के ६२ प्रतिशत लोगों को रिश्वत देकर काम करवाने का प्रत्यक्ष अनुभव है और आम नागरिक प्रतिवर्ष करीब २१०६८ करोड़ रुपये रिश्वत देता है.
- बाढ़, सूखा, या अन्य आपदाओं के समय मंत्रीगण व अधिकारी विमान, हेलीकॉप्टर और कारों के काफिलों का प्रयोग करते हैं, नतीजन जितनी राहत पीड़ित-जनों को नहीं मिल पाती है उससे कहीं ज्यादा मंत्री व अधिकारियों पर खर्च पड़ जाता है.

उसकी वेदना और आक्रोश को समझा जा सकता है.

भारतीय संविधान भारत को एक लोकतांत्रिक राष्ट्र घोषित करता है पर सत्ता शीर्ष पर बैठे निर्वाचित जन प्रतिनिधियों का चरित्र देखें तो अच्छे-अच्छे राजा-महाराजा भी शरमा जायें. संसद व विधान सभाओं में आरोप-प्रत्यारोप की भाषा ही नहीं बल्कि मारपीट व गाली गलौज भी आम चीज बन गई है. घरों में टी.वी. पर बैठकर जनप्रतिनिधियों का यह तमाशा देखने वाले बच्चे और युवा पीढ़ी इन घटनाओं से क्या सीख लेगें, सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है. हमारे अधिकतर जनप्रतिनिधि अपनी आपराधिक पृष्ठभूमि के चलते वैसे भी सदैव चर्चा का विषय बने रहते है. अपराधियों का राजनीतिकरण हो रहा है या राजनीति का अपराधीकरण हो रहा है, कुछ भी कहना बड़ा कठिन है. अभिनेता-अभिनेत्रियों के मन्दिर और उनकी पूजा अब पुरानी बात हो गई हैं, भारतीय राजनीति में भी इसके उदाहरण खुलकर सामने आने लगे हैं. यहॉ 'व्यक्ति पूजा' मुहावरा नहीं बल्कि यथार्थ बन गया है. धर्मनिरपेक्षता को संविधान का मूलभूत तत्व माना गया है पर तमाम राजनेता धर्म एवं देवी-देवताओं की शरण लेते रहते हैं. इसे उनका व्यक्तिगत आग्रह समझकर दरकिनार भी कर दिया जाय तो यहॉ देवी-देवताओं व पैराणिक चरित्रों से तुलना ही नहीं बल्कि जनप्रतिधियों को स्वयं देवी-देवता बना दिया गया. कभी धर्म के नाम पर वोट मॉगना, कभी चाटुकारिता की हद तक जाकर एक ही व्यक्ति का नाम जपना, तो कभी नेताओं को ईश्वर बना देना-इससे बड़ा मजाक लोकतंत्र में और नहीं हो सकता. आपातकाल के दौर में तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष देवकान्त बरूआ ने कहा था-"इन्दिरा इज इंडिया एण्ड इंडिया इन इन्दिरा." मानों यहॉ लोकतंत्र नहीं सामन्तवाद या राजतंत्र का साया हो. तमिलनाडु में एम.जी.रामचन्द्रन की मृत्यु के पश्चात चेन्नई में उनका मन्दिर बनवाया गया, जिसमें उन्हें देवता के रूप में दिखाया गया. जयललिता को पोस्टरों में 'काली मॉ' के रूप में दिखाया गया तो मायावती ने कहा कि मैं ही माया (लक्ष्मी) हूँ. राजस्थान में वसुन्धरा सरकार के तीन साल पूरे होने के उपलक्ष्य में जारी कैलेण्डर में उन्हें देवी एवं भाजपा के शीर्ष नेताओं अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी व राजनाथ सिंह को क्रमशः ब्रहमा, विष्णु व महेश के रूप में दर्शाया गया. मुरादाबाद में सोनिया गॉधी को दुर्गा मॉ की वेशभूषा में भ्रष्टाचार व आतंकवाद का संहार करते हुए दिखाया गया तो जबलपुर में एक पूर्व विधायक ने सोनिया गॉधी को रानी लक्ष्मीबाई के रुप में पोस्टर में दिखाया. महाराष्ट्र में विलासराव देशमुख को गोवर्धन उठाते श्रीकृष्ण के रुप में दिखाया गया, तो कानपुर में एक रैली के दौरान लालकृष्ण आडवाणी को नरसिंह अवतार के रुप में दिखाया गया. कर्नाटक में सत्ता में आते ही भाजपा सरकार ने जून २००८ में एक परिपत्र जारी किया, जिसमें कहा गया कि प्रदेश के मंदिरों में मुख्यमंत्री और सरकार के नाम पर प्रतिदिन पूजा-अर्चना की जाय. ऐसे न जाने कितने उदाहरण है जो राजतन्त्र व सामंती समाज की याद दिलाते हैं. जनता के बीच जाकर उनके दुख-दर्द को सुनने और उनका उपचार करने की बजाय राजनैतिक दलों के शीर्ष नेताओं की वन्दना, राजनीति में पर्दापण करने व कुर्सी पाने का शार्टकट तरीका बन गया है. 'चालीसा' राजनीति इसी की देन है.

अब जरा संवेदनशील होकर इन संदर्भो के परिप्रेक्ष्य में देश के कर्णधारों की कारगुजारियों पर गौर करें कि आये दिन अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं, टी.वी. और मंचों पर देश का युवावर्ग, किसान, मजदूर, कारीगर इन बातों को सुनकर या पढ़कर गुनेगा तो उसके मानस-पटल पर क्या प्रभाव अंकित होगा? अपने इन राष्ट्रीय कर्णधारों की कारगुजारियों व फिर लम्बे-लम्बे प्रवचनों से उसकी क्या धारणा बनेगी? जब देश का उच्च पदस्थ वर्ग ही भ्रष्टाचार के आरोपों के संशय में कैद हो, उसका आचरण लोगों की निगाह में साफ-सुथरा न हो तो फिर उस देश का भविष्य क्या होगा? इसी कारण डॉ० राम मनोहर लोहिया ने कहा था कि यदि भ्रष्टाचार को खत्म करना है तो इसकी शुरुआत उच्चपदस्थ लोगों से होनी चाहिये. पर दुर्भाग्यवश आज इस देश का नेतृत्ववर्ग अपने स्वार्थ में अंधा हो अपने पद का सारा फायदा अपनो के लिए बटोर रहा है. वह चाहे जाति के रुप में हो, भाई-भतीजावाद के रूप में हो, क्षेत्रवाद के संदर्भ में हो- किन्तु दायरा संकीर्णता व स्वार्थ का है. आज चूँकि सारे लोग इसी संकीर्णतावादी नजरियें में कैद है सो 'हमाम में सब नंगे है' की तर्ज पर एक दूसरे की कमजोरियों और बुराईयों को अनदेखा कर रहे हैं. निश्चितः आज स्वस्थ एवं समग्र नेतृत्व का संकट देश पर मंडरा रहा है और जब तक स्वस्थ नेतृत्व नहीं पैदा होगा, भारत की धरती पर से जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद, भ्रष्टाचार, अराजकता, आतंकवाद का खात्मा नामुमकिन है. यह मंथन का विषय है कि हमारे साथ ही आजादी पाये तमाम राष्ट्र विकास के कई पायदान चढ़ गये, पर भारत में अपेक्षित प्रगति नहीं हुई. वर्तमान के तथाकथित कर्णधारों की आवाज में दम नहीं है क्योंकि आवाज में दम, संस्कार, विचार और चरित्र से आता है. पर ये कर्णधार अन्दर से खोखले है. इसे राष्ट्र की बदकिस्मती ही कहा जायेगा कि इन नेताओं की कोई नीति नही हैं,

नैतिकता नहीं है, चरित्र की पवित्रता नही हैं, समग्रता नही है, समदर्शिता नहीं है. ये राजनीति को सिद्धात के तहत नहीं, बल्कि कूटिल नीति के तहत चला रहे है, क्योंकि ये अवसरवादी है. हर नेतृत्व अपने सिंहासन को बचाये रखने के लिए राष्ट्रीयता, अखंडता, एकता, धर्मनिरपेक्षता, बंधुत्व, समता का नारा लगाता है किन्तु सबकी मानसिकता एक जैसी है. आज सभी राजनैतिक दलों एवं नेताओं का एकमात्र लक्ष्य सत्ता है और सत्ता की इस कुर्सी तक पहुँचने के लिए कभी ये राष्ट्रीयता, अखंडता, एकता, धर्मनिरपेक्षता, बंधुत्व, समता व समाजवाद की सीढ़ी लगा लेते है तो कुछ को रामनाम की सीढ़ी लगाने में भी परहेज नहीं.

आज स्पष्ट रूप से दो वर्ग आमने-सामने हैं-एक, संतुष्ट वर्ग एवं दूसरा असंतुष्ट वर्ग. संतुष्ट वर्ग चूँकि राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक, सांस्कृतिक और धार्मिक हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व बना चुका है. अतः वह यथास्थितिवाद को बनाये रखने के लिये कटिबद्ध है, चाहे इसके लिये कितने भी झूठ का सहारा लेना पड़े. राष्ट्रहित में जरुरी है कि यह वर्ग लोगों को उपदेश देने की बजाय अपनी कथनी-करनी में अंतर स्वयं मिटाकर ईमानदारी, चरित्र, कर्मठता, अनुशासन को अपने आचरण में उतारे. जिस दिन यह सुविधाभोगी वर्ग संकल्पबद्ध होकर त्याग का आदर्श उपस्थित कर देगा, देश-समाज की दशा सुधरने में वक्त नहीं लगेगा. दूसरी तरफ असंतुष्ट वर्ग का नेतृत्व सत्ता की कुर्सी के लिये लोगों की भावनाओं का शोषण व दोहन कर रह रहा है. अभी तक वह समाज को नवीन विचार नहीं दे पाया और जब तक विचार नहीं पैदा होगें, तब तक समाज में न तो बदलाव आयेगा और न हीं क्रांति.

++++++++++++++++++++++

हर कानून को धुएं में उड़ाता चला गया

केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने सिगरेट एंड अदर टोबैको प्रोडक्टस कानून २००३ के तहत अधिसूचना जारी कर दी है. मई में यह अधिसूचना लाई गई थी. लेकिन सिगरेट निर्माता आईटीसी एवं अन्य व्यावसायिक संगठनो ने हाईकोर्ट में इसे

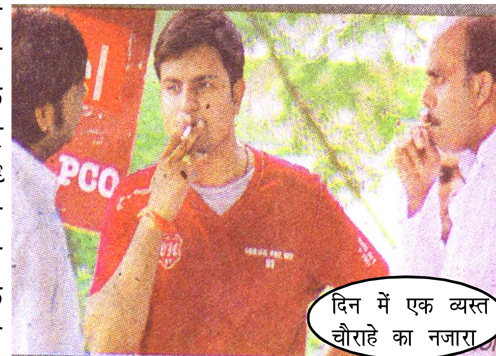

दिन में एक व्यस्त चौराहे का नजारा

चुनौती दी थी. स्वास्थ्य मंत्रालय ने सुप्रीम कोर्ट का सहारा लिया और सुप्रीम कोर्ट ने इस पाबंदी पर स्थगनादेश देने से इनकार कर दिया. लेकिन सार्वजनिक स्थानों पर बीड़ी-सिगरेट पीने की पाबंदी का आदेश पहले दिन ही धुएं में उड़ता दिखा.

बैंक अफसरों को सता रहा जाली नोट का भूत

करेंस्टी चेस्ट से नकली नोट के बंडल मिलने और एटीएम से भी जाली नोट उगलने की बढ़ती शिकायतों से बैकों में हड़कंप मच हुआ है. शाखाओं में हर बड़ा नोट शक की नजर से देखी जा रही है. और उन्हें कई चरणों की जांच के बाद ही जमा किया जा रहा है. इसकी वजह से से पैसा जमा करने आए ग्राहकों को देर तक लाइन भी लगानी पड़ रही है. जालसाज इसके हाइटेक हो गए है कि जाली नोट के कागज और छपाई में अंतर कर पाना काफी कठिन हो गया है. बैको में आलम यह है कि अफसर और कर्मचारी खजाने से संबंधित पद लेने से कतरा रहे है. नियमानुसार कांउटर से जाली नोट मिलने पर सबसे पहले खजांची के खिलाफ एफआईआर लिखानी चाहिए.

लेखक का नाम डालना है

राष्ट्रीय मुद्दा

पर्यावरण जागरुकता में मीडिया का महत्व

- जैसे मानव द्वारा छोड़ी हुई कार्बन डाई आक्साइड पेड़-पौधे पी जाते है और बदले में आक्सीजन प्रदान करते है. इसी तरह पेड़-पौधों तथा जीव-जन्तुओं को प्रकृति ने पर्यावरण के शोधन हेतु नियुक्त कर रखा है.
- अपनी भोग लिप्सा व सुख-सुविधा के समक्ष मनुष्य इस प्रदूषण को नगण्य समझता है.
- जागृति पैदा करने के लिए कहा गया है कि 'जहॉं न जाय रवि वहॉं जाय कवि' यह कवि मीडिया ही है.

पर्यावरण की समस्या सम्पूर्ण विश्व की समस्या है, जिससे सृष्टि का अस्तित्व ही संकट में है. प्रकृति ने पर्यावरण के शोधन के लिए तथा शुद्ध बने रहने के लिए अपना सारा प्रबन्ध कर रखा है. वह शंकर जी की भॉंति पर्यावरण में पैदा होने वाले जहर को स्वयं पी जाती है. जैसे मानव द्वारा छोड़ी हुई कार्बन डाई आक्साइड पेड़-पौधे पी जाते है और बदले में जीवन शक्ति आक्सीजन के रुप में प्रदान करते है. इसी तरह पेड़-पौधों तथा विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं को प्रकृति ने पर्यावरण के शोधन हेतु नियुक्त कर रखा है. किंतु जैसे भस्मासुर को वरदान देकर भगवान शंकर स्वयं संकट में फंस गये थे, वैसे ही इस मनुष्य को प्रकृति के उपभोग की सामर्थ्य देकर सृष्टिकर्ता ने सृष्टि को ही संकट में डाल दिया है. यह मनुष्य भस्मासुर हो गया है और विषय भोगों को अधिकाधिक मात्रा में भोगने की लालसा में प्रकृति के साथ ऐसा छेड़-छाड़ कर रहा है कि पर्यावरण शोधन की प्राकृतिक मशीनरी असफल हो रही है और मानवकृत पर्यावरण प्रदूषण चतुर्दिक सुरसा के बदन की तरह बढ़ता जा रहा है. वायु, जल, मिट्टी, आकाश सब प्रदूषित होते जा रहे हैं. जिसके परिणाम स्वरुप अनेकानेक प्रकार के रोग पैदा हो रहे हैं. यहॉं तक कि इस पृथ्वी को ब्रम्हाण्ड के नक्षत्रों से आने वाली शक्तिशाली घातक पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी पर आने से रोकने वाला रक्षा कवच ओजोन पर्त के नाम से जाना जाता है, उसमें छेद होता जा रहा है.

वैज्ञानिकों का कहना है कि यह सब मनुष्य द्वारा फैलाए हुए प्रदूषण के कारण ही हो रहा है. इस प्रदूषण के साथ प्रकृति की शोधक मशीनरी को भी अपनी छेड़-छाड़ से खराब करने वाला मनुष्य है. अपनी भोग लिप्सा व सुख-सुविधा के समक्ष मनुष्य इस प्रदूषण को नगण्य समझता है. वह इसकी उपेक्षा करता है तथ पूर्ण रुप से इसके प्रति लापरवाह है. उसे प्रत्यक्ष लाभ तो दिखाई देता है. किन्तु उससे होने हानि उसके समझ में नहीं आती. इस प्रकार इस पर्यावरण प्रदूषण का कारण मनुष्य की नासमझी है. अतः इसको मनुष्य में समझदारी पैदा करके ही रोका जा सकता है. कहने का तात्पर्य यह है कि इसके लिए मनुष्य में जागृति की आवश्यकता है.

अब प्रश्न यह उठता है कि यह जागृति कैसे पैदा की जा सकती है. जब कोई व्यक्ति नशे में होता है तो उसे कोई सीख नहीं दी जा सकती है क्योंकि वह सीख ग्रहण करने को राजी ही नहीं हो सकता. इसी प्रकार अपनी भोगलिप्सा में लिप्त मदांध मनुष्य की समझ में पर्यावरण प्रदूषण की बात कठिनाई से आयेगी. इसके लिए उसे बार-बार धक्के लगाने पड़ेगे. वास्तव में यह कार्य मीडिया ही कर सकती है. मीडिया के अलावा और कोई एजेंसी ऐसी नहीं है जो कोई भी जानकारी सूर्य के प्रकाश की तरह बराबर धरती के चप्पे-चप्पे पर पहुॅंचा सके. यह तो एकमात्र मीडिया के द्वारा ही संभव है. मीडिया क्षेत्र, जाति, शिक्षा आदि का बिना भेद किये जन-जन तक पहॅुचती जहॉं सूर्य नहीं पहॅुचता. इसीलिए कहा गया है कि 'जहॉं न जाय रवि वहॉं जाय कवि' यह कवि मीडिया ही है. किन्तु रवि तो मात्र दिन में बारह घंटे ही रहता है मीडिया रात-दिन कार्यरत रहती है. वास्तव में किसी प्रकार की सार्वजनिक जानकारी व जाग्रति मात्र मीडिया के माध्यम से ही हो सकती है. मीडिया एक उत्तरदायी एजेंसी है. उसका कार्य रचनात्मक व विकासात्मक ही होना चाहिए. मीडिया का सबसे बड़ा उद्देश्य होना चाहिए, बिगड़ते हुए वातावरण को संभालने का, समाज व राष्ट्र के सरंक्षण का. इसीलिए इन्हें पत्रकार नाम से सम्बोधित किया जाता है. पत्रकार शब्द का अर्थ होता है पतनात्त्रायते इति पत्रकारः. अर्थात् जो संसार को पतन से बचाये वह पत्रकार है. मीडिया को पर्यावरण के प्रति जागरुकता लाने के लिए पूरा प्रयत्न करना चाहिए. इसके लिए सरकार का सहयोग मीडिया को बहुत आवश्यक है. सरकार द्वारा यह कार्य मीडिया को सौंपा जाना चाहिए जिसके लिए आर्थिक सहयोग के साथ-साथ संरक्षात्मक सहयोग मिलना चाहिए. सरकार द्वारा सुविधा मिलनी चाहिए. सरकारी विज्ञापन मिलना चाहिए. सरकारी प्रोत्साहन मिलना चाहिए. सभी को एक मंच पर प्रण की जरुरत है. तभी उद्देश्य की

कहानी

भीलड़ रेशमां

✍डॉ० रजनी शर्मा

भारतीय संस्कृति की गौरव नारी का इतिहास उसके सूर्य जैसी तपन, धरती जैसी सहन पर्वत जैसी दृढ़ता और गुलाब जैसी कोमलता की गाथा सदैव गाता है- इसी की परिचायक है- लोकनायिका भीलड़ रेशमां की कहानी.

प्राचीन काल में महाराज धनेश्वर राय (काल्पनिक नाम) राजस्थान के रायसिंह नगर के अधिपति थे. उनके शासन-काल में प्रजा बहुत सुखी थी. लेकिन वहॉ एक बार अकाल पड़ा. चारों ओर भीषण गर्मी व अकाल से परेशान, किसान इन्द्र देवता को मनाने लगे. रायसिंह नगर में पानी के अभाव में त्राहि-त्राहि मच गई. प्यास से पशु-पक्षी छटपटाने लगे, छॉव के लिए दूर-दूर तक पेड़ों पर पत्ते नजर नहीं आ रहे थे. लोगों की ऑखें जल की आशा में आकाश को ताकते-ताकते पथराने लगी.

राजा धनेश्वर नाथ सोचने लगे प्रजा का कष्ट कैसे दूर किया जाए, सभी कुॅए सूख गये, वावड़िया खाली आ रही थी, तभी उन्होंने राज्य मन्त्रियों की सलाह ली....क्या करें? जिससे राज्य में खुशहाली आये. तभी एक मंत्री ने सलाह दी, कि सबसे निकट पंजाब ही है वहां से नहर निकाली जाये, जो कि रायसिंह नगर को पुनः हरा भरा खुशहाल कर सकती है.

सर्वसम्मति से यह निश्चय हो गया कि नहर की खुदाई शुरु की जाये. राजा ने आदेश दिया, यह कार्य शीघ्र की सम्पन्न हो, एक मंत्री ने सुझाव दिया कि महाराज! इस कार्य के लिए तो राजस्थानी मजदूर बुलाये जायें तभी यह कार्य शीघ्र व उत्तम हो सकेगा.

तभी राजा ने भील जाति के लोगों को काम पर बुला लिया. नहर की खुदाई का काम बड़ी तेजी से चलने लगा. भील लोग धूप व गर्मी की चिन्ता किये बिना मेहनत से कार्य करने लगे. भीलों का सरदार उरुक्रम था उसकी पत्नी रेशमां भीलण थी, बहुत सुन्दर थी, वह अप्सरा जैसी रूपवती थी. उसकी उम्र अठारह वर्ष के लगभग थी, यौवन उसके अंग-प्रत्यंग में समाया था. वर्णकान्ति, रूप लावण्यता और यौवन की वह त्रिवेणी थी-जैसे कि सोने पे सुहागा' सरदार की जोड़ू होकर भी वह अन्य मजदूर भीलणियों की तरह मेहनत से काम कर रही थी.

एक दिन राजा निरीक्षण हेतु उस स्थान पर पहुॅचा, जहां खुदाई का काम चल रहा था. सांयकाल तक वहॉ रहा-सभी मजदूर और मजदूर पत्नियॉ भीलणियॉ राजा के सामने से गुजर रही थी अचानक राजा की दृष्टि रेशमा भीलण पर पड़ी तो चकित रह गई. राजा के मुख से एकाएक शब्द निकले....विध ााता ने यह रूप, यह यौवन मिट्टी खोदने के लिए नहीं बनाया....आम्र कुंजो में रहने योग्य कोयल बबूल के कांटो में उलझी रहेगी.... राजा का मन-मस्तिष्क अब विचलित हो गया, वह उसकी रुप लवण्यता पर मुग्ध हो गया. वह मन ही मन मन्त्रणा करने लगा रेशमां को रानी बनाकर एक दिन महल में लाना है.

अब प्रतिदिन राजा प्रातः ही वहॉ उपस्थित हो जाता और मौके की तलाश करता कि कब वह सरदार पत्नी रेशमां निकले तो उससे अकेले में कुछ बात कर सकूं. दूसरे दिन जब रेशमां मिट्टी का बोझ लिए पसीने से लथपथ थी, तब राजा ने उसे इशारे से बुलाना चाहा, परन्तु वह सीधी सरल भीलण, पर पुरुष की परछायी से भी डरती थी. राजा उसकी ओर टकटकी लगाए देखता रहा, यद्यपि सरदार नायिका उसकी भावना को ताड़ गयी. यदि वह राजा न होता तो शायद वह अपनी हाथी दॉत की चूड़ियों से उसका सर फोड़ डालती. शाम तक राजा की इशारे बाजी से वह मुॅह छुपाती रही. राजा भारी मन से महल में लौट आया किन्तु उसका हृदय वहीं पर भटकता रहा. प्रातः पुनः राजा उसकी रुप लव ाता में पद मर्यादा भुलकर मजदूरनियों के पीछे-पीछे चल पड़ा और जिस राह पर वे मिट्टी फेंकने के लिए जाती थीं, उसी रास्तें पर बड़ी सी पत्थर शिला पर जा बैठा और प्रतीक्षा करने लगा. .. उसकी प्रतीक्षा व्यर्थ नहीं गई, कुछही देर में अन्य भीलणियों की तरह रेशमा भी सिर पर मिट्टी की टोकरी उठाये वहॉ से गुजरी. राजा ने ध्यान से उसे देखा परन्तु उसने अनदेखा कर दिया और अपने छोटे बच्चे को अपनी छाती से चिपका कर एक अलग स्थान पर जा एक पेड़ के निकट बैठकर दूध पिलाने लगी. राजा भी वहॉ पहुॅच गया और पूछने लगा-'क्या नाम है...तुम्हारा 'रेशमा, मैं सरदार की जोड़ू हूॅ.' सरदार की पत्नी होकर भी तुम मजदूरी करती

हो, तुम्हारा पति बड़ा निर्दयी है, जो तुम जैसी फूल सी पत्नी से मजदूरी करवाता है. तुम्हारा यह रुप क्या मिट्‌टी ढोने के लिए है? उसने उत्तर दिया–महाराज! मेरे भाग्य में जो बदा था, वह मुझे मिला है.'

रेशमां! तुम्हारे चाहने से तुम राजरानी भी बन सकती हो.

'महाराज! अगर मेरे भाग्य में राजरानी का पद लिखा होता, तो क्या मैं किसी राजघराने में न जन्म लेती? महाराज आप महान आदमी हो, आप मुझ जैसी भीलण पर मुग्ध होकर क्या करोगें. मुझे मेरे भाग्य पर रहम दो.'

'रेशमां, तुम भाग्य को गलत समझ रही हो. तुम केवल इतना समझ लो कि रायसिंह नगर का साम्राज्य तुम्हारे चरणों में बिछा है, चाहों तो स्वीकार करो.'

'महाराज, जो राज्य आप इस भीलण के चरणो में रखने को तैयार हो गये है, उसकी कीमत ही क्या है? आप यदि किसी दूसरी स्त्री पर मुग्ध हो गये तो यह राज्य उसके चरणों में चला जाएगा. आपका यह स्त्री मोह कहीं आपके राज्य की उन्नति में रोड़ा न बने.'

'रेशमा, उन्नति अधोगति की बातें छोड़ो, अपने बारे में सोचो.'

'अच्छा महाराज यह बताइये कि आपके राजमहल में मेरा स्थान रखैल का होगा या गृहणि का?'

राजा को आशा बंधी. वह उत्साह से बोले–'हमारा गान्धर्व विवाह होगा प्रिये! तुम मेरी गृहिणी ही नहीं, धर्मपत्नी बनकर रहोगी. तुम मेरी शकुन्तला बनोगी, शकुन्तला!'

'लेकिन, महाराज, शकुन्तला को तो दुष्यंत भूल गया था.'

'रेशमा तुम मेरे बारे में गलत सोच रही हो. यदि मैं तुम्हें किसी भी स्थिति में तनिक भी भूल सकता, तो आज तुम्हारे सामने याचक बनकर न खड़ा होता.'

'महाराज! ये सब तो कहने की बाते हैं, और बातों का क्या भरोसा. सच यह है कि हम ऐसे कमजोर और कायर नहीं कि बिना मेहनत किये इतनी मंहगी मजदूरी आपसे चाहे. हम जैसे है, उसी में प्रसन्न है.

राजा समझ गया, इस भीलड़ को मनाना तो टेढ़ी खीर है. राजा लज्जित व उदास मन से लौट आया. राजा के राजमहल में रानी ने व्यग्र होकर पूछा–'क्या आप मुझसे अप्रसन्न है? क्या बात है, महाराज! आप बहुत उदास हैं. राजा ने कहा प्रजा की विपदा से मैं दूखी हूँ. प्रतिपक्ष मुझे ऐसा लग रहा है... प्रजा को कहीं मेरे किसी पाप का ही फल तो नहीं भोगना पड़ रहा है. जीवन मुझे भार सा प्रतीत हो रहा है. मैं अब भगवान से मौत की भिक्षा मांग रहा हूँ. रानी ने सान्तवना दी और कहा नहीं स्वामी आप ईश्वर पर भरोसा रखें, हरियाली आ जायेगी. रानी को कुछ भी पता नहीं था कि राजा का मन भीलण पर डोल गया है.

अगला दिन हुआ, वही समय, वही स्थान राजा ने रेशमा को मनाने का एक और प्रयत्न किया. बोला 'हे सुन्दरी! तुम अकेली मेरे यहॉ आने में संकोच करती हो. मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी तुम यदि उरुक्रम के साथ भी महल में रहना चाहो तो रह लो.'

इतना सुनकर भीलण तिलमिला उठी लेकिन दबी जवान से उसने कहा–'सरकार, जब आप जैसे बड़े महान व्यक्ति परिणाम का विचार नहीं कर पा रहे हैं, तो हम गंवारो की तो बात ही क्या है?'

अभी भी राजा ने आशा नहीं छोड़ी प्रलोभन पर प्रलोभन देता रहा. 'यदि तुम मेरी बात मान लोगी, तो तुम रानी और तुम्हारा बच्चा राजकुमार माना जायेगा.'

रेशमा अब चुप रही, राजा ने सोचा शायद अब तो बात बन ही गयी.

रेशमा अब मन ही मन घबरा रही थी, उसने अपने पति उरुक्रम को राजा की हरकत का पूर्ण व्यौरा ज्यों का त्यों बता दिया. सरदार को अपनी पत्नी पर पूरा भरोसा था. लेकिन भीलों में तो धीरे–धीरे यह बात आग की तरह सुलग रही थी. चारो ओर राजा और भीलण रेशमा की चर्चा हो रही थी, कोई कह रहा था राजा रो दिमाक खराब है, कोई कहता भीलण का चरित्र गिर गया है. इन सभी बातों से सरदार का मन दुखी व बेवस हो रहा था. वह अपने बीबी बच्चों को लेकर नगर छोड़कर भाग जाने की योजना बनाने लगा. लेकिन राजा को इसका सुराग लग गया. उरुक्रम जैसे ही नगर छोड़कर भागा, वैसे ही राजा ने अपने सैनिकों का जाल बिछा दिया तथा आदेश दिया कि जैसे भी हो

ग़ज़ल

बॉटते थे कल भाई दर्द ना रसाई के
आज हो गये दुश्मन खुद ही भाई-भाई के
ज़िन्दगी के मेले ने क्या दिया इन ऑखों को
ख्व़ाब कुछ मुहब्बत के और दिल रुबाई के
नश्शा की तेजारत में लाभ है बहुत लेकिन
ले गये तबाही तक रास्ते कमाई के
सिर्फ कै़द की घड़ियॉ गिन के अपना दिन गुज़रे
बन्द हो गये सारे रास्ते रिहाई के
आसपास का मौसम खुश गवार है लेकिन
ज़िन्दगी के चेहरे पर दर्द हैं जुदाई के
गुमरही में ये बच्चे धुन रहे है अपना सर
वक्त के अँधेरे में दिन गयी पढ़ाई के

डॉ० मधुर नज्मी, मऊ, उ०प्र०

रेशमा को मेरे कदमों में हाजिर कर दो. सैनिकों ने भीलण जोड़े को गिरफ्त में ले लिया, उरुक्रम अपनी स्वतंत्रा के लिए खींचा तानी करते-करते लहुलुहान हो गया. बेचारी रेशमां बेबस सी घमासान लड़ाई देखती रही और आंसू बहाती रही. जब उसने देखा उसका पति पस्त होकर जमीन पर गिर पड़ा. शायद वह अब नहीं बच पायेगा तो उसने अपना बच्चा एक अन्य भीलण को सौपते हुए कहा-'ठुमरी! तू इस बच्चे को संभालना. मुझे बच्चा जितना प्यारा है, उससे भी कहीं अधिक मुझे अपना शील. मैं राजस्थाणा री भीलण, म्हारों तो शील स म्हारो राज सै. उसने अपने पति के साथ ही दम तोड़ने की ठाण ली, उसने जूड़ा खोला और लहुलुहान रक्त के फब्बारे से रक्त-रञ्जित होते हुए अपने पति का सिर अपनी गोदं में रखकर वह मां काली से प्रार्थना करने लगी, मां अम्बे मैं अपने सुहाग को सिर्फ मांग मेंही नहीं, रग-रग में समाना चाहती हूँ. आप मेरे सतीत्व की रक्षा करें इतना कह, वह अपने हाथ में कटारी लिए अपनी छाती में घोप ही रही थी कि ''रुको,....देवी.

राजा लज्जा से नतमस्तक होकर उसके सामने घुटने टेक दिया और ससम्मान उसके पति उरुक्रम को स्वयं अपने रक्तदान द्वारा बचा लिया.

धन्य है वह रेशमा भीलण जिसने इतने बड़े राजा से टक्कर ली और जीते जी अपने सतीत्व की रक्षा की. यही है भारतीय संस्कृति का सच्चा स्वरुप. भारतीय नारी की दृढ़ता पर्वत के समान दृढ़ होती है 'ध्रुवस्तिष्ठा विचाचलिः, पर्वत इवा विचाचलिः।'

ग़ज़ल

वे बेगैरत होते हैं जो कौमी एकता के नाम से,
भुला निज पुरखों का बलिदानी इतिहास देते हैं।
देख के आततायियों का महिमामंडन बारबार,
'बृजेश' अतीत के टीस भयानक त्रास देते हैं।
बेशर्म ऑखों का पानी मर चुका है, जाने कब का,
बेगैरतमंदी का आलम यही आभास देते हैं।
अपने जाबांज पुरुखों का बलिदान भूल गये हैं वो
बर्बरों का गुणगान मन की गुलामी का अहसास देते हैं।
बुरी लत गई हिन्दुस्तानियों को जाने कब से,
अपनों की भूल गैरों को अहमियत खास देते हैं।
प्रताप, शिवा गोविन्द ने सींचा आजादी के पौध को,
ये मगर अकबर आलमगीर को प्रतिसाद देते हैं।
उन्हें पृथ्वी, संग्राम का बलिदान याद नहीं बृजेश
फकत गोरी बाबरों का गुणगान मन को उल्लास देते है।

डॉ० बृजेश सिंह,बिलासपुर, छ.ग.

क्या यह जंगलराज नही है

जब जी चाहा राह रोक दी, जब जी चाहा जाम लगाया,
सरकारी सम्पदा फूंक दी, निर्दोषों को खूब सताया।
क्या यह जंगलराज नही है।
आरक्षण यदि नहीं मिल तो, फूंक दिये वाहन सरकारी,
पुलिस रोकने अगर गयी तो, मारे पत्थर भारी-भारी।
क्या यह जंगलराज नही है
चिन्ता क्या रोगी मर जाये, भूखे प्यासे तड़पे बच्चे,
चौराहे पर धरना जारी, जनता घूमे खाती धच्चे।
क्या यह जंगलराज नही है
ले कोई कानून हाथ में, किसी गुरु की सीख नहीं है,
लेकर निकल पड़े तलवारे, यह दुस्साहस ठीक नही है
क्या यह जंगलराज नही है
चित्र बनाया डेनमार्क में, हंगामा हिन्दुस्तान में,
लूट मार की तोड़ा-फोड़ा, आगजनी की घर दुकान में।
क्या यह जंगलराज नही है।
हो फॉसी सद्दाम मियां को, अमरीकी शासन ईराक में,
किन्तु हमारे कुछ नेतागण, सोग अलापे यहां राग में।
क्या यह जंगलराज नही है।
कट्टरपंथी कह देना भर, आग लगाने को काफी है,
इस भारत में हमे छोड़कर, बाकी सबको ही माफी है।
क्या यह जंगलराज नही है।
एक नहीं कानून यहां पर, ना समान आचार संहिता,
भेद भाव में जला रहे है, नेता भारत विश्व वंदिता।
क्या यह जंगलराज नही है।
पुलिस अगर गोली बरसायें, तो मानवाधिकार रोता है,
यदि खामोश रहे तो तुमने, देख लिया कल क्या होता है।
क्या यह जंगलराज नही है।
है राजा-धृतराष्ट्र और जनता भी शायद गंधारी,
मन मानी करता दुःशासन, चौराहे पर पिटती नारी।
क्या यह जंगलराज नही है
तुष्टिकरण और आरक्षण, यह दो नाग रोज डसते है,
उल्फा, नक्सल या आतंकी, आस्तीन में ही बसते है।
क्या यह जंगलराज नही है
संसद और विधानसभा में दागी ही सरनाम हुए है,
चोर लुटेरे या व्यभिचारी, नेताओं में आम हुए है।
क्या यह जंगलराज नही है

हितेश कुमार शर्मा, बिजनौर, उ०प्र०

दागदार सियासतदारों के चौखट पे आज,
सफेदपोशों की चमकती पोशाकों पे न जाना कभी,
इनके अन्तस की कालिमों को देखा है हमने।
काबिलियत, मेहनत धरी की धरी रह जाती यहॉ,
सम्मान, पदक पाते तमाशबीनों को देखा है हमने।

डॉ० बृजेश सिंह,बिलासपुर, छ.ग.

समाज

सामाजिक संगठन एवं कार्यकर्ता

- सामाजिक संगठन जितना सुदृढ़ होगा उतना ही कार्य अच्छा होगा.
- सामाजिक संस्थाओं के पद सेवाभाव से कार्य के लिए होते है, लाभार्जन के लिए नहीं
- किंतु संस्था के पदाधिकारी/कार्यकर्ता कार्यो को लगन व उत्साह से नहीं करते
- यदि आपके पास समय नही है तो किसी संस्था में पदभार नहीं लेना चाहिए. केवल सम्मान या नाम प्रतिष्ठा के लिए किसी संस्था में पद ग्रहण करना किसी प्रकार से बुद्धिमता नही है.
- संस्था तभी सुचारू रूप से संचालित होगी जबकि उसके पाससमयबद्ध कार्यक्रम होगा, पर्याप्त अर्थ सुलभ होगा. समर्पित कार्यकर्त्ता होगे

किसी भी महत्वपूर्ण योजना को मूर्तरूप देकर साकार करना हो तो वह एक व्यक्ति द्वारा संभव नहीं हो सकता. यदि उसे संगठित होकर किया जाये तो वह योजना, कार्य शीघ्र व अच्छे तरीके से पूरा किया जा सकता है. इसके लिए ही सामाजिक संगठनों की आवश्यकता होती है. सामाजिक संगठन जितना सुदृढ़ होगा उतना ही कार्य अच्छा होगा. संस्था-संगठन का भवन या कोष सुदृढ़ हो इससे संगठन सुदृढ़ नहीं हो सकता. संगठन का प्राण व धन होते है, उसके पदाधिकारी उसके कार्यकर्त्ता यदि वे निष्ठावान है तथा उनका संचालन प्राणवान है तो संस्था प्रभावी व तेजस्वी हो सकती है. पदाधिकारी संस्था के हृदय होते हैं तो कार्यकर्ता संस्था की रीढ़ होती है. यदि संस्था के पास समर्पित, उद्यमी तथा सद्चरित कार्यकर्त्ता होंगे तो वह संस्था समाज का कल्याण व उत्थान कर सकती है.

पद सेवा के लिए होते है-सामाजिक संस्थाओं के पद सेवाभाव से कार्य करने के लिए होते है न कि किसी प्रकार के लाभार्जन के लिए. यदि कार्यकर्ता पूरी निष्ठा के साथ अपने पद के दायित्व को पूरा करते हैं तो वह संस्था शीघ्र ही अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर तेजस्वी बन जायेगी. कार्यकर्ता ही संस्था की छबि को निखार सकते है. किंतु संस्था के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता संस्था के कार्यो को लगन व उत्साह से नहीं करते तथा संस्था के कार्यो के लिए अपना समय व श्रम नहीं देते तो वह सस्था बेजान हो जाएगी और थोड़े समय में ही उसका कार्य बंद हो जायेगा. इसके कई उदाहरण है-अनेक कार्यकर्त्ताओं ने शुरू-शुरू में तो अपने नाम व पद के लिए अपनी अलग-अलग संस्थाएं बनाई किंतु वह संस्था के कार्यो के लिए अपना समय नहीं दे सके एवं अर्थ की व्यवस्था नहीं कर सके तो वह शीघ्र ही बंद हो गयी. इसलिए कार्यकर्त्ता यदि संस्था का निर्माण करते हैं तो उसके संचालन के लिए उन्हें समय भी अवश्य देना चाहिए. यदि आपके पास समय नही है तो आपको किसी संस्था में पदभार नहीं लेना चाहिए. संस्था का पदाधिकारी बनने का तात्पर्य यही है कि आप उसके कार्यक्रमों, योजनाओं तथा विकास में पूरी रूचि रखकर समय देंगें. केवल सम्मान या नाम प्रतिष्ठा के लिए किसी संस्था में पद ग्रहण करना किसी प्रकार से बुद्धिमता नही है. अब प्रश्न यह है कि संस्था को गतिशील रखने के लिए कार्यकर्त्ताओं की भूमिका क्या है?

संस्था का कार्य तभी सुचारू रूप से अच्छी तरह संचालित होगा जबकि उसके पास समयबद्ध कार्यक्रम होगा, पर्याप्त अर्थ सुलभ होगा. समुचित रूप से हिसाब रखा जायेगा. समर्पित कार्यकर्त्ता होगे तथा वह आपस में टीम वर्क से कार्य करेंगें. एक दूसरे के साथ तालमेल व समन्वय रखेंगे. संगठन का संचालन का कार्य भी अनेक रूप से किसी कंपनी की तरह ही संचालित होता है. प्रभावी एवं कुशल पदाधिकारी को संगठन को गतिशील बनाने के लिए कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए.

१.सर्वप्रथम तो यह देखना चाहिए कि एक गॉव या नगर में एक ही सामाजिक संस्था हो और सभी स्थानीय परिवारों को उसका सदस्य बनाया जावें.

२. संगठन के सदस्यों की संख्या के अनुसार उसके संचालन हेतु कार्य समिति या कार्यकारिणी का गठन करना चाहिए तथा कार्यकारिणी के सदस्यों की संख्या भी कुल सदस्यों की संस्या के अनुपात में निश्चित करना चाहिए. कार्यकारिणी के प्रत्येक पदाधिकारी के कर्त्तव्य व अधिकार संगठन का विधान बनाकर निश्चित करना चाहिए.

वार्षिक कार्यक्रम निर्धारणः
पदाधिकारियों का कर्तव्य है कि संगठन के वार्षिक कार्यक्रम तथा बजट का नियोजन करें. एक वर्ष के अंतर्गत होने वाले कार्यक्रम व आयोजनों का निर्धारण होने के पश्चात उसके लिए अर्थ की व्यवस्था कैसे होगी यह भी विवरण तैयार करना चाहिए.

कार्यक्रम का कार्यान्वयनः जो कार्यक्रम बनाए हैं उनको अच्छी तरह संपन्न करने की जिम्मेदारी प्रत्येक पदाधिकारी

की होती है इसलिए पदाधिकारियों को कार्यक्रम निर्धारण करते समय ऐसे कार्यक्रमों को ही चुनना चाहिए, जो सुविधापूर्वक उपलब्ध हो या बजट के अंतर्गत संपन्न हो सके. पदाधिकारियों को चाहिए कि वह पूरे वर्ष में सिर्फ दो-तीन कार्यक्रम ही विशेष समारोह के साथ रखें. लेकिन उनको इतनी अच्छी तरह संपन्न करे ताकि समाज का हर परिवार उससे लाभान्वित हो.

अर्थ व्यवस्थाः पदाधिकारियों को संगठन के संचालन तथा दैनिक आवश्यकताओं के लिए कितना रुपया प्रति वर्ष चाहिए इसका अनुमानित बजट बनाना चाहिए. बजट के अनुसार ही आय व्यय पर पूरा नियत्रंण रखना चाहिए. संगठन के कोषाध्यक्ष व सचिव का दायित्व है कि वह संस्था के हिसाब को भी अच्छी तरह रखें उसका आडिट करावे तथा वार्षिक आय व्यय विवरण तैयार कर साधारण सभा में सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत करें.

महत्वपूर्ण दायित्व- संगठन के अध्यक्ष व सचिव का महत्वपूर्ण दायित्व है कि वह समाज की वर्तमान समस्याओं का गहन अध्ययन करके उनके निराकरण हेतु ठीक कदम उठावे तथा समस्याओं का समाधान उचित ढंग से करें. जो सबसे महत्वपूर्ण समस्या हो उसका सबसे पहले हल निकाले. शिक्षा, उद्योग, रोजगार, कुरीति उन्मूलन आदि कार्यो के लिए एक लक्ष्य निर्धारण करके संगठन के पदाधिकारियों को अपनी-अपनी जिम्मेदारी सौंपना चाहिए. किसी विशेष कार्य के लिए पृथक समिति का गठन कर अन्य सदस्यों को भी उसका दायित्व सौंपना चाहिए.

कार्यो का मूल्यांकन- अध्यक्ष व सचिव का दायित्व है कि वह संगठन द्वारा आयोजित कार्यक्रमों का मूल्यांकन भी अवश्य करें. जो लक्ष्य निर्धारण किया गया था वह समय में तथा उसी बजट में पूरा हुआ या नहीं. जिन जिन सदस्यों ने कार्य पूरा करने में सहयोग दिया उनको सम्मानित करना या उनको धन्यवाद पत्र भेजना भी एक कुशल अध्यक्ष की जिम्मेदारी होती है. यदि कार्य समय मे पूरा नहीं हुआ या बजट से अधिक खर्च हुआ तो उसके क्या कारण है? यह मालूम कर भविष्य में ऐसा न हो इसका पूरा ध्यान रखना चाहिए. अज जब हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं तो हमें अब आगे बढ़ना है विश्व में अन्य समाजों के साथ-साथ प्रगति करना है. नये युग की अपेक्षायों के अनुरुप हमें हमारे समाज को भी प्रगतिशील बनाना है. किंतु हमें अपनी भारतीय संस्कृति को भी नहीं भूलना है. हमें अपने जाति जन्मदाता महेश के आदर्शो को सदा ध्यान में रखना है.

समन्वय की भावना- संत तुलसी दास जी ने कहा है कि-

तुलसी या संसार में भांति-भांति के लोग।
सबसे हिलमिल चालिये नदी नाव संयोग।।

इसलिए कार्यकर्ता में अहं की भावना की बजाय समन्वय की भावना होना नितान्त आवश्यक है. एक श्रेष्ठ, कार्यकर्ता बनने के लिए निम्न बातों का संकल्प करना चाहिए.

१. हम सदैव रचनात्मक कार्य करेंगे. छोटा से छोटा कार्य भी समाज सेवा का हो तो उसे करने में गर्व समझेंगें।

२. सभी को समान समझेंगे. किसी को धन या शिक्षा के कारण बड़ा-छोटा नहीं समझेगें. चाहे व निर्धन हो, धनी हो, शिक्षित हो या अशिक्षित हों.

३. सबसे महत्वपूर्ण गुण कार्यकर्ता में जो होना चाहिए वह है दृढ़ संकल्प, ठोस निर्णय, अपने में आत्म विश्वास की भावना.

झूठी प्रशंसा से दूर रहेंगे-अधिक नाम, अधिक प्रशंसा कैसे हो? कार्यकर्ताओं में यह भावना आज ज्यादा बढ़ रही है. थोड़ा सा कार्य करके उसका अधिक दिखावा करना तथा अधिक सम्मान चाहना यह सच्चे कार्यकर्ता के लिए अवगुण है. सच्चे कार्यकर्ता बिना किसी पद के कार्य करते है. निष्ठावान, परिश्रमी, समर्पित कार्यकर्ताओं का अभाव आज प्रत्येक संगठन में है. इसलिए समाज की प्रगति कैसे संभव है? हमें सामाजिक संगठनों को उन्नत व प्रगतिशील बनाना है तो पहले कार्यकर्ता को स्वयं चरित्रवान एवं पारदर्शी बनाना पड़ेगा. स्वयं से अधिक संगठन को महत्व देना होगा. समय का सदुपयोग करना होगा तथा पूर्ण उत्साह से संगठन के कार्यो में तन, मन, धन से सहयोग देना होगा. तभी समाज में आपकी स्मृति एवं प्रतिष्ठा स्थायी बन सकेगी.

जब तुम आये जगत जग हँसा तुम रोय।
ऐसी करनी कर चलो तुम हंसें जग रोय।

मुर्दो की आंख का भी कारोबार

<u>**मदन लाल,**</u> अंबाला, पटियाला, मानव अंगो की तस्करी की खबरों के बीच पुलिस ने अब मुर्दो की आंखो के कारोबार का भंडाभोड़ कर डॉक्टरा को गिरफ्तार किया है. पुलिस ने पटियाला के डॉक्टर दंपति समेत चार लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कर तीन को गिरफ्तार किया है. अंबाला शहर के सिविल अस्पताल का एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी सुनील कुमार उर्फ लाला लावारिश लाशों की ऑखे निकालकर पटियाला के डॉक्टर जसविंदर पाल सिंह और उनकी पत्नी नीलम को महज डेढ़ हजार रुपये में बेच देता था. डॉक्टर का ड्राइवर अंबाला आकर इस कर्मचारी से आंखे ले जाता था और डॉक्टर यह आंखे मरीज को लगाकर मोटी कमाई करता था. डॉक्टर दंपति ने इसके लिए किसी अथारिटी या पंजाब मेडिकल डायरेक्टर से मंजूरी नहीं ली हुई थी.

कहानी

हथौड़ी

एक छोटा सा गॉव था. उस गांव में सभी धर्मो के मानने वाले लोग रहते थे. सभी लोग मिल-जुल कर रहते थे. खेतीबाड़ी करना और पशुपालन ही उनका मुख्य व्यवसाय था. गांव के सभी लोग आत्मनिर्भर थे. दिन भर मेहनत करना और शाम को जो मिल जाए खा लेना.

गांव से बाहर इसके आखरी छोर पर गांव वालों ने एक ऐसा स्थान बनाया हुआ था जिस स्थान पर वे लोग सारा साल अपने-अपने मवेशियों का गोबर आदि इकट्‌ठा करते रहते थे. इस तरह वहां पर गोबर का एक विशाल टीला सा बन जाता था. जब खेती करते समय खाद की आवश्यकता होती तो उस समय सभी किसान अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार गोबर को खाद के रूप में प्रयोग किया करते थे.

एक दिन अचानक आकाश में बादल छा गए. जोर से बिजली कड़की और कड़कने वाली बिजली का एक टुकड़ा गोबर के ढेर पर आ गिरा. इस बात को कुछ महीने बीत गए थे.

वह दिन आया जब किसानों को खाद की जरूरत हुई. सभी किसान वहां पर अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार खाद रूपी गोबर ले रहे थे. लगभग जब सारा गोबर लिया जा चुका था तभी अचानक गोबर के ढेर के निचले स्थान से एक गोला निकला. वह एक बड़े आकार का साफ सुथरा लोहे जैसे धातु का लगता था. किसानों ने आनन-फानन में उसकी जांच के लिए गांव के एक पुराने लुहार को बुलाया. सभी लोग उस अद्‌भुत चीज को घेरे हुए खड़े थे.

लुहार ने उस गोले को देखा और परखने के लिए उसे अपने हाथा से इध र-उधर घुमाया और बोला, "कहां से यह गोला यहां आया है. यह तो बड़ा अजीब सा है." ज्योहिं लुहार ने उसको परखने के लिए उस पर अपने हथौड़े से एक चोट की तो वह गोला बम की तरह फट गया और हथौड़े को ले आकाश में उड़ता गया... और फिर आंखो से ओझल हो गया.

धमाका सुनकर सभी इधर-उधर भागने लगे थे और हथौड़े को आसमान में उड़ता देखकर दंग रह गए.

थोड़े दिनों में जीवन सामान्य सो हो गया. एक दिन अचानक एक हथौड़ा लुहार की झोपड़ी के आगे धमाके की आवाज के साथ गिरा. लुहार और लुहारिन ने उसके हत्थे के कारण अपने हथौड़े को पहचान लिया. पर हथौड़े का लोहे वाले भाग का तो रूप ही बदला हुआ था. वह बहुत चमकदार और सोने की भांति लग रहा था.

दोनो पति-पत्नी हथौड़े को लेकर गांव के महाजन के पास गए. महाजन ने हथौड़े को परखा और कहा कि एक हजार रुपये में हथौड़े को मुझे बेच दो. लुहार ने समझदारी से काम लिया और सोचा कि यह कंजूस महाजन इस हथौड़े को एक हजार रुपये में खरीद रहा है. इसका मतलब यह हथौड़ा कीमती है इसे शहर में जाकर बेचना चाहिए. शहर जाकर वह हथौड़ा तीन लाख रुपये में बेच दिया. तीन लाख रुपये पाकर लुहार और लुहारिन की खुशी की कोई सीमा नहीं न रही और वे अपना जीवन चैन से बिताने लगे. सोने के हथौड़े की खबर सब लोगों को मिल चुकी थी. और यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गई कि गांव का लुहार हथौड़ी को बेचकर बहुत अमीर हो गया है.

दूसरे साल फिर से नई फसल बोने का समय आया. किसान फिर से उसी तरह से गोबर के ढेर से गोबर लेने के लिए आने लगे तो क्या देखते हैं कि गोबर टीले के आसपास लुहार ही लुहार अपने-अपने हाथो में हथौड़ा लिए खड़े थे.

वेद प्रकाश कंवर, नई दिल्ली

परंपरा

स्कूली घंटियों की,
क्रूर उंगली थामे,
मैं बड़ा हुआ
वक्त के साथ
कालखण्ड दर कालखण्ड।
प्रश्नचिन्हों का नागनथैया
मैं अपनी
निपुणताओं की तमाम संज्ञाओं से
सुशोभित कर लिया,
मेरे कांधे अब
जिन्दगी के बस्तों की
बोझ ढोने का प्रमाण पत्र
हथिया चुके हैं।
निष्ठुर, कनबहरी परंपराओ ने
भूख के आतंक से बचाने
मुझे रंगाकार बना दिया;
कूची और कैनवास त्याग
अब मैं सिर्फ
लोगो के कपड़े रंगता हूँ
साधक को खोकर
साधना सदैव
पछताती ही होगी।
मेरी बेरंग जिन्दगी की
घोर अमावस ने
थमा ही दी मुझे
परंपरा की धर्मध्वजा
रोशनी की बहार छीनकर
मैं युवा काल में ही
हो गया सन्यासी
मुझे देश की
बढ़ती जनसंख्या से
नफरत हो चली है।

रमेश कुमार सोनी, बसन, छ.ग.

राजनीति

राज ठाकरे का आतंकवाद

- राज ठाकरे और उनके अनुयायी बम्बई को अपने बाप की जागीर समझने लगे है
- जया बच्चन के हिन्दी समर्थन में एक वाक्य कह देने भर से राज ठाकरे पुनः भड़क उठे और अमिताभ बच्चन को क्षमा याचना करनी पड़ी.
- रेल भर्ती की परीक्षा में बैठने गये अभ्यर्थियों को मारापीटा, कापियॉ फाड़ दी गयी और उत्तर भारतीयों को दौड़ा-दौड़ा कर पीटा गया.
- शिवाजी को जो सम्पूर्ण हिन्दुस्तान के लिए मुगलों से लड़ते रहे. उनके मन में कभी नहीं आया होगा कि उन्हें केवल मराठियों के लिए ही लड़ना है.

✍ **हितेश कुमार शर्मा,** बिजनौर,उ०प्र०

भारतवर्ष में काफी प्रान्त है और सभी प्रान्तों में अच्छा भाईचारा है. कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली, हैदराबाद जैसे महानगरों में देश के प्रत्येक प्रान्त के व्यक्ति रोजगार की तलाश में जाते है और वहां कार्य करते है. ऐसा कभी नहीं देखा गया सुना कि किसी एक विशेष प्रान्त ने दूसरे प्रान्त के लोगों को अपने प्रान्त से भगाने के लिए मुहिम छेड़ा हो और मारपीट तक की हो. लेकिन जो कभी नहीं हुआ वह अब हो रहा है क्योंकि वोट की राजनीति ने सरकार को नपुसंक बना दिया है. यही कारण है कि राज ठाकरे और उनके अनुयायी बम्बई को अपने बाप की जागीर समझने लगे है और वहां पर किसी और प्रान्त के व्यक्ति की उपस्थिति सहन करने को तैयार नहीं है.

पहले भी बम्बई वासियों ने, तथाकथित मराठाओं ने उत्तर भारतीय लोगों पर हमला किया और दूध वाले भय्यों को तथा उत्तर प्रदेश/दिल्ली आदि प्रान्तों के रहने वालों को मारापीटा और बम्बई छोड़कर भाग जाने को विवश किया. जया बच्चन के हिन्दी समर्थन में एक वाक्य कह देने भर से राज ठाकरे पुनः भड़क उठे और परिणाम स्वरुप अमिताभ बच्चन को क्षमा याचना करनी पड़ी. ऐसा तीन बार हो चुका है. अमिताभ बच्चन एक ऐसा व्यक्तित्व है जो जहां पर स्थित हो जायेगा वही फिल्मीस्तान बन जायेगा और बालीवुड की स्थापना हो जायेगी. किन्तु अमिताभ बच्चन से स्वाभिमान खोकर भी बम्बई में ही रहना पसन्द किया जिसका पूरे उत्तर भारत को मलाल होना चाहिए. मुझे व्यक्तिगत रूप से इसका बहुत दुख है.

अब पुनः रेल भर्ती की सेवाओं की परीक्षा में बैठने गये अभ्यर्थियों को मारापीटा, परीक्षा हॉल में घुसकर कापियॉ फाड़ दी. टी.वी. में दिखाया गया और अखबारों के फोटो के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि उत्तर भारतीयों को किस प्रकार दौड़ा-दौड़ा कर पीटा गया. यह सब घटनाएँ इंगित करती है कि देश को खण्ड-खण्ड करने का द्रेशद्रोही अभियान चल रहा है. शर्म आ रही होगी शिवाजी को जो सम्पूर्ण हिन्दुस्तान के लिए मुगलों से लड़ते रहे. उनके मन में कभी नहीं आया होगा कि उन्हें केवल मराठियों के लिए ही लड़ना है. ऐसा नहीं है यह पहली बार ही हुआ है. यदि किसी गलती को पहली बार में ही दबा दिया जाये तो वह दौहरायी नहीं जाती. यदि आसाम में जब गैर आसामियों को बाहर निकाला जा रहा था तभी यदि सख्ती से उग्रवादियों को दबा दिया जाता तो बम्बई में इस घटना की पुनरावृत्ति नहीं होती. वोट के कारण हर जगह झुकना देश को बरबादी की ओर ले जा रहा है. ऐसे प्रदेश, जहॉ इस प्रकार के विरोध हैं वहॉ विरोधियों को, सरकारी सम्पत्ति को आग लगाने वालों को, मारपीट और तोड़फोड़ करने वालो को, देशद्रोही करार दिया जाना चाहिए और देखते ही गोली मारने के आदेश होने चाहिए.

राज ठाकरे समर्थक मारपीट तो कर ही रहे है. पहले भी की है और उकसाने पर आगे भी करेगें. सरकारी सम्पत्ति को आग लगा रहे है, तोड़फोड़ कर रहे है. इस सबका हर्जा-खर्चा राज ठाकरे की सम्पत्ति से लिया जाना चाहिए. सरकार को नपुंसकता नही दिखानी चाहिए बल्कि भगवान कृष्ण का यह उपदेश याद रखना चाहिए. शठे शाठयूम समाचरेत्. यदि दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार नहीं करेंगे तो दुष्ट आप पर हावी हो जायेगा. राज ठाकरे और उसके समर्थकों ने दुष्टता की है जिसके लिए उन पर देशद्रोह का मुकदमा चलना चाहिए.

यदि सख्ती से काम नहीं लिया गया तो यह बीमारी पूरे देश में फैल जायेगी. बिहार में प्रतिक्रिया आरम्भ हो गयी है. कैसे रोकेंगे आप उन लोगों को जो महाराष्ट्र में पिटकर आये हैं. जब आप मनसे को ही प्रतिबन्धित नही कर पा रहे हैं, उसे ही नहीं रोक पा रहे हैं तो क्रिया की प्रतिक्रिया अवश्य होगी. यदि क्रिया को रोक दिया जाये तो प्रतिक्रिया अपने आप रूक जायेगी.

जिस प्रकार से हम आतंकवादियों को विरूद्ध कार्यवाही करते है वही कार्यवाही आगजनी, तोड़फोड़, मारपीट और हत्या के मामले में होनी चाहिए. राज ठाकरे के समर्थकों ने जो हत्याएं की है उसका मुकदमा हत्या के लिए उकसाने के संबंध में राज ठाकरे के विरूद्ध चलना चाहिए. हत्यारों को प्राण दण्ड देने का सिद्धात अनुकरणीय है.

जब तक मनसे और राज ठाकरे को सजा नहीं दी जाएगी तब तक सुधार होना संभव नही है और जब तक सुधार नहीं होता तब तक बम्बई में राष्ट्रपति शासन लगा दिया जाना चाहिए और प्रान्त को फौज के हवाले कर दिया जाना चाहिए और उपद्रवियों को देखते ही देखते ही गोली मारने के आदेश दे दिये जाने चाहिए. बम्बई को दी जाने वाली सभी सुविधाएँ. राशन, पानी, बिजली बंद कर दी जानी चाहिए. देशद्रोहियों के साथ कोई रियायत नहीं होनी चाहिए. मनसे जैसा संगठन पूर्णतया प्रतिबन्धित होना चाहिए. इस संबंध में

- वोट के कारण हर जगह झुकना देश को बरबादी की ओर ले जा रहा है.
- सरकारी सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाने वालों को, देशद्रोही करार कर, देखते ही गोली मारने के आदेश देना चाहिए.
- यदि दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार नहीं करेंगे तो दुष्ट आप पर हावी हो जायेगा.
- जिस प्रकार से हम आतंकवादियों को विरूद्ध कार्यवाही करते है वही कार्यवाही आगजनी, तोड़फोड़, मारपीट और हत्या के मामले में होनी चाहिए.
- मनसे जैसा संगठन पूर्णतया प्रतिबन्धित होना चाहिए.

जरा सी भी ढील, जरा सी भी नपुंसकता अगर सरकारा की ओर से दिखायी गई तो उसका दुष्परिणाम बहुत भयंकर होगा. बम्बई में उपद्रव होंगे बिहार में उसकी प्रतिक्रिया होगी उत्तर प्रदेश और दिल्ली भी अछूते नहीं रहेंगे.

यदि हमें पूरे देश को खण्ड-खण्ड होने से बचाना है इस बीमारी से बचाना है तो हमें राज ठाकरे और उसके समर्थकों के साथ रियायत नहीं करनी चाहिए. कभी-कभी पूरा शरीर बचाने के लिए हाथ या पैर का थोड़ा हिस्सा काटना पड़ जाता है. उसी प्रकार देश को खण्ड-खण्ड होने से बचाने के लिए उसको खण्ड-खण्ड करने वाले, उसकी अखण्डता पर आघात करने वाले व्यक्तियों पर कठोर दण्डनी कार्यवाही आवश्यक होती है. बम्बई मे उपद्रवियों के हौसलें बहुत बढ़ चुके हैं उनको दबाना होगा. यही एक मात्र उपाय है देश की अखण्डता को बचाने का है.

++++++++++++++++++++

रचनाएं आमंत्रित है

ए आग कब बुझेगीः

इसमें आरक्षण/भ्रष्ट्राचार/दहेज/जातिवाद/नारी शोषण/ राजनीति से संबंधित आलेख/कविताएं/ कहॉनिया/लघुकथाएं/व्यंग्य रचनाएं/संस्मरण आमंत्रित है. इस बात विशेष ध्यान रक्खें कि रचनाएं १५०० शब्दों से अधिक की न हो. सचित्र जीवन परिचय एक रचना तथा २५०/-रुपये अथवा दो रचनाएं ५००/- रुपये सहयोग राशि के साथ

अंतिम तिथि : ३० दिसम्बर २००८

के साथ आमंत्रित है. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए जवाबी टिकट लगे लिफाफे के साथ लिखें/भेजें-आप अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०ःएस.बी. 538702010009259 में सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के नाम से भी जमा कर सकते है अथवा धनादेश/डी.डी./चेक सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते है.

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखेंः

प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011

ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

कहानी

दिलेर दर्जी

✍सुखवर्ष कंवर 'तन्हा', नई दिल्ली

शहर से दूर-दराज में एक गांव था, जिसमें पांच मित्र रहते थे. यह संजोग ही था कि उन पांचो को एक ही काम आता था और वहएक ही स्थान पर काम करते थे और उनका मालिक भी एक ही था. वह सब दर्जी थे. गांव में उनका काम जम नहीं सका तो वह दूर शहर में निकल गए. साल में एक बार वह अपने गांव जरूर आते, अपना गुजर-बसर कंजूसी से कर जो भी बचा पाते उसमें से कुछ गांव भेजे देते. कुछ गांव के सुधार के लिए गांव के सरपंच कोा दे देते. क्योंकि उन सबने यह फैसला किया था कि गांव की भलाई के लिए भी कुछ न कुछ करते रहेंगे. अगर सारे गांव के लिए न कर सकें, कुछ तो सुधार ला सके. इस प्रतिज्ञा को निभाने के लिए वहं पाचों खूब काम करते, उनकी इस कोशिश से धीरे-धीरे गांव में सुधार होने लगा. अबकी बार जब वह गांव आ रहे थे, उनके पास कमाई का काफी पैसा था. उनके गांव एक छोटा सा जंगल भी पड़ता था.

सर्दी के दिन थे, ये पांचो जब शहर से चले तो दिन था. लेकिन गांव पहुँचने से पहले शाम ढल गई. रास्ता तो जाना-पहचाना था, लेकिन सर्दी के साथ-साथ बरसात आने का भी डर था. गहरे, काले बादलों ने संध्या को रात में बदल दिया था. वहीं पास में एक टूटा-फूटा मकान था जिसमें इनको शरण लेनी पड़ी. जैसे ही वे वहां पहुंचकर अलाव जलाने की सोची तो उस अंधेरी और सूनी रात में उन्हें कुछ आहट सुनाई दी. वह संभलकर बैठ गए और बिना आवाज किए कान लगाकर उस आहट को सुनने लगे कि वह कैसी है और कहां से आ रही है. फिर उन्होंने झांक कर देखा और पाया कि उस टूटे-फूटे मकान में कुछ और लोग आकर भी रूके हैं. कुछ घबराहट हुई और उनकी चलती सांसे थम सीस गई. उन्होनें देखा कि वहां कुछ लुटेरे के हाथों में हथियार भी थे. इनको यह डर सताने लगा कि कहीं उनकी नजर हमारी मेहनत की कमाई पर पड़ गई और वह उसे लूट ले गए तो हम क्या करेंगे. यह लोग ऐसा सोच ही रहे थे कि उन्हें लुटेरों की ऊंची-ऊंची आवाजे आने लगी क्योंकि वह आपस में ही लूटा हुआ माल बांट रहे थे. घबराहट में एक दर्जी के हाथ से कैची नीचे गिर गई और लुटेरों के लड़ने की आवाज एकदम बंद हो गई. इन पांचो के पसीने छूट गये, क्योंकि लुटेरों की संख्या भी इनसे अधिक थी.

न जाने कहां से इन्होने हिम्मत बटोर ली और उधर से हमला होने से पहले इनका दिमाग तेजी से चला और एक योजना बन गई. एक दर्जी जोर से बोला, 'रोज कितने काट लेते हो.'

दूसरे ने थोड़ा और जोर लगा कर कहा, 'सात-आठ काट लेता हूँ.'

तीसरा बोला, 'आज मैने दस टांगे काटी, ऐसी ही कभी बाजू काटता हूँ. कभी गले काटता हूँ.'

फिर दो मिनट के लिए सांस रोक कर बिलकुल खामोश हो गए, उन्होनें दूसरी तरफ झांक कर देखा और पाया कि लुटेरों के हाथ भी रूक गये हैं और वह इनकी बातें कान लगाकर सुन रहे है. ऐसा महसूस होते ही चौथा भी जोर से बोला कि कई बार तो इनसे ज्यादा कट जाते हैं और कुछ अंग भी बच जाते है तो उनको थैलों में डालकर फेंकना पड़ता है. कई बार तो फेंकने के लिए स्थान भी नहीं मिलता.'

यह सब बातें सुनकर लुटेरों में घबराहट शुरु हो गई और उनके हाथ जहां थे वहीं रुक गए. क्योंकि लुटेरों ने समझा कि उनसे भी बड़े लुटेरे, कत्ल करने व ाले इस स्थान पर छुपे हुए है.

फिर पांचवा दर्जी जोर से बोला, 'यह सब तो अपने सरदार के आदेश पर करना पड़ता है. भईया अभी हमारे सरदार यहां आने वाले है, देखो वो किस-किस को काटने का आदेश देते है.'

यह कहते-कहते पांचो ने जोर-जोर से पैरों के जूते चटकाने आरम्भ कर दिए. इनकी आवाजें और शोर सुनकर लुटेरों के हाथ-पैर कांपने लगे और उन्होंने अपनी मशाल बुझा दी. कुछ मिनटों के लिए वहां पूरी तरह शान्ति छा गई.

ग़ज़ल

घर से निकल के महफ़िलों में मुस्कराए हम,
कोई न जाना पाया कितना रोके आए हम।
कोशिश रही कि दर्द को अपने में छिपाले,
दुनिया में दिखावे की खुशी देख आए हम।
हमदर्दी दिखा करके गमों की कुरेदना,
इन आजकल के दोस्तों से बाज आए हम।
महफ़िल में जिसके आते ही सब सोचने लगे,
हॅस पड़ता है यह रोते हुए क्या छिपाए गम।
चुपचाप रहे दर्द कहीं आम न हो जाए,
गोया कि ग़में परदानशी हो के आए हम।
मै जानता हूॅ जब भी खुशी की तलाश की,
घर से ही घिर के बादलों में भीग आए हम।
रब से हमेशा 'भारती' मांगी यही दुआ।
वह खुश रहे जिसके लिए सब छोड़ आए हम।

पी.एस.भारती, बरेली, उ०प्र०

थोड़ी देर बाद दो तीन दर्जी जान-बूझ कर जोर से बोले, 'अरे, कौन है वहां' फिर उन्होनें कैचियों से जोर-जोर से आवाजें निकाली. लुटेरों को एहसास कराया कि वह गिनती में उनसे अधिक है. जब लुटेरों को खतरे का एहसास हुआ तो वह वहां से दुम दबा कर भाग खड़े हुए, लेकिन भागते हुए उनका कुछ लूट का माला भी वहीं छूट गया. अब फिर पूर्णतयः कुछ समय के लिए शान्ति थी क्योंकि इन लोगों ने अपनी सांसे रोककर लुटेरों को वहां से भागने का इन्तजार किया. जब इन्हें महसूस हुआ कि मैदान खाली है, सब भाग चुके है तो इन सबको जोर से हंसी छूट गई और सिर गर्व से ऊंचा हो गया. इन्होंने लुटेरों का बचा हुआ माल इकट्ठा किया और सुबह होने का इन्तजार करने लगे. वैसे भी इस घटना चक्र में आधी से अधिक रात तो निकल चुकी थी. इन सबने फैसला किया कि वो लूट के माल को पास नहीं रखेगे. सुबह पंचायत बुलाकर सबसे पहले यह काम करेगे. यदि सरपंच गांव की भलाई के लिए इन्हें रखना चाहे नहीं तो सरकार को लौटा देगें.

दूसरे दिन पंचायत बुलाई गई और सारी स्थिति पंचो और गांव वालों के सम्मुख रखी गई. कुछ लोगो ने इसे गांव की भलाई के लिए लगाने को कहा, कुछ लोगों ने इसे सरकार को वापिस लौटाने के लिए कहा. आखिर में बड़े बुर्जुगों ने कहा इस धन को हमारे बहादुरों ने लुटेरों से अपनी समझ से बचाया है और हमें मालूम नहीं यह किसका है. यदि हम इस धन को गांव की भलाई और गरीबों की गरीबी दूर करने में प्रयोग करते हैं, तो कुछ बुराई नहीं है. यही धर्म का काम है. फिर सर्वसम्मति से उस धन को गांव में अच्छी-अच्छी सड़के बनी, चारों तरफ एक बहुत बड़ी दीवार खड़ी कर दी, जिससे जंगली जानवर और लुटेरों से बचा जा सके. उनका गांव दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करने लगा और वो पांचो ज्यादा से ज्यादा समय गांव की भलाई में लगाने लगे. शहर अब वह बहुत कम जाते थे. क्योंकि अपने गांव से उनको बड़ा प्यार था. वह समझ चुके थे उनके गांव से समाज की उन्नति है, देश की उन्नति है. वह अपना समय समाज सेवा में बिताने लगे. फिर कुछ समय के पश्चात् वह पांचो गांव के सरपंच बन गए. इनको देखकर दूसरे लोग भी पैसा और मदद देकर गांव की उन्नति में हिस्सेदारी करने लगे. वह सदा सत्य के मार्ग पर चलते रहे, उनका दिलेर दर्जियों के नाम से मशहूर हुआ.

अरे! अरे! मैं तो आपको उनका नाम ही बताना भूल गई. उनके नाम थे-अफजल मियां, जॉन इब्राहिम, रमेश, बंता सिंह और साधु राम. उनके दिलों में देश प्रेम की भावना थी, जो उन्हें सामान्य व्यक्ति से दिलेर बना गई.?

++++++++++++++++++++++++

जन्म मृत्यु

जन्म-उद्गम एक अनुक्रम-युग युगों से है सनातन
मृत्यु अन्तिम सत्य सत्यम् है विसर्जन जीव जीवन
कर्म ही जीवन है मानव मान
लक्ष्य अपना श्रेष्ठतम ही ठान
छोड़ रति औ मोह का अनुराग
क्यों उसी की व्यर्थ भागमभाग?
पाप पुण्यों के पड़े सोपान
देख करले एक अनुसन्धान
और उठकर तोड़ बन्धन
युगों युगों से जो सनातन.
जन्म उद्गम.....
मृत्यु करती जीव बन्धन मुक्त
नर्क की औ स्वर्ग की आयुक्त
जो करे संचित तेरे आलेख
तदन्तर निश्चित करम की रेख
समझ लें इतना अगर संज्ञान
स्वयं की कैसे करें पहिचान?
करके देखें आत्म मंथन आत्म मंथन
मृत्यु अनुपम सत्य सत्यम् इति श्री जीव जीवन।
जन्म उद्गम-मृत्यु सत्यम्

प्रमोद पुष्कर, भोपाल-३

राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान-२००६ हेतु प्रविष्ट्रियॉं आमन्त्रित है

अ.भा.साहित्य संगम, २६१/३, ताम्बावती मार्ग, आयड़, उदयपुर ३१३००१ सम्पूर्ण देश के प्रतिभाशाली साहित्यकारों, कवियों, लेखकों एवं सम्पादकों से वर्ष २००६ के राष्ट्रीय सम्मानार्थ प्रविष्ट्रियॉं आमन्त्रित करता है. संस्था के संस्थापक छन्दराज ऊँ पारदर्शी ने जानकारी देते हुए बताया कि सम्मानोपाधियों में कवि-कुलाचार्य, कवि-सम्राट, अक्षरादित्य, कलम-कलाधर, काव्य-कुमुद, काव्य-कौस्तुभ, काव्य-कल्पतरु, काव्य-कुमुदिनी, काव्य-कल्पेश, काव्य-कलावंत, काव्य-कलानिधि, काव्य-किरण, काव्य-कादम्बिनी, काव्य-कदम्बिनी, काव्य-कदम्ब, काव्य-कल्पज्ञ, काव्य केसरी, साहित्य सागर, साहित्य सुघट, साहित्य सरोज, साहित्य संजीव, साहित्य संजय, साहित्य सुदर्शन, साहित्य सुधाकर, साहित्य सुरभि, साहित्य सौरभ, साहित्य सरताज, एवं साहित्य सर्वज्ञ की सम्मानोपाधियॉं उनके साहित्यिक योगदान के आधार पर प्रदान की जाएगी. इच्छुक प्रतिभागी अपनी श्रेष्ठ पुस्तक की दो प्रतियां, अपना संक्षिप्त परिचय, एक रंगीन फोटो तथा स्वयं के दो पतायुक्त पोस्टकार्ड, २५रुपये के डाक टिकट, २८ फरवरी २००६ तक पंजीकृत डाक अथवा कोरियर द्वारा उपरोक्त पते पर भेजें. किसी अन्य जानकारी के लिए दूरभाष संख्याः २४११०२६, मो०ः ६४१३७६३६६१ पर सम्पर्क करें.

बहुमुखी व्यक्तित्व की धनी: श्रीमती सपना गोस्वामी

व्यक्तित्व

✍जया 'गोकुल

८ अगस्त १९६७ को श्री राजकिशोर भारती के घर में जन्मी, माता श्रीमती सोना भारती के मातृत्व को आहलादित करने वाली, भारत स्काउट गाइड में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त श्रीमती सपना गोस्वामी बचपन से ही होनहार व बहुमुखी प्रतिभा की धनी रही है. प्राथमिक शिक्षा से लेकर इंटर तक की शिक्षा राधा रमण इंटर कॉलेज, नैनी से प्राप्त कर ई.सी.सी. कॉलेज, इलाहाबाद से १९८६ में स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की. उसके बाद १९९४ में कानपुर विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय से परास्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की. १९९९ में सम्पूर्णानंद विश्वविद्यालय से बी.एड. की परीक्षा उत्तीर्ण की.

सपना गोस्वामी अपने शैक्षणिक योग्यता के साथ ही साथ अन्य गतिविधियों में भी बाल्यावस्था से ही शरीक होती रही. १९७७ से १९८३ तक लगातार राधा रमण इंटर कॉलेज के वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाती रही. १९८१-८२ में स्काउट गाइड में ध्रुव पद प्राप्त किया. १२वीं कक्षा में अध यन के दौरान १९८४ में विचित्र वेशभूषा प्रतियोगिता, सलाद प्रतियोगिता तथा रिलेरेस में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा विवग्योर, वार्षिक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में विजयी रही. इसी वर्ष स्काउट गाइड में राष्ट्रपति अवार्ड प्राप्त की. ई.सी.सी. के वार्षिक समारोह के २०० मी. रिले महिला दौड़ में द्वितीय, भाला फेंक में प्रथम, डिसकस थ्रो में द्वितीय, १०० मी. ओमेन द्वितीय स्थान प्राप्त किया. होम नर्सिंग कोर्स भी उत्तीर्ण किया तथा वोमेन्स कोचिंग, इलाहाबाद द्वारा आइसक्रीम, स्नैक्स, स्प्रे पेन्टिंग की भी ट्रेनिंग ली.

शैक्षणिक कक्षाओं में हमेशा अब्बल रहने वाली सपना गोस्वामी प्राथमिक से लेकर परास्नातक तक अच्छी छात्राओं में सुमार होती रही, कई बार विशेषांक भी मिले. १९९१ में गुरुनानक पब्लिक स्कूल नैनी में अध्यापन कार्य से अपना व्यावसायिक जीवन प्रारम्भ किया तथा १९९५ में निशा ज्योति संस्कार भारती विद्यालय, नैनी में सहायक अध्यापक बनी. १९९६ में इसी विद्यालय में प्रधानाचार्या का पद ग्रहण किया तब से लेकर अभी तक इस पद पर ही बनी हुई है. १९९८ में बी.एड. प्रशिक्षण के दौरान विशेष प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया. तीन बहनों में सबसे बड़ी सपना गोस्वामी का विवाह जनवरी १९८८ में बुलंद शहर के श्री मोहित गोस्वामी के साथ हुआ. प्रखर व्यक्तित्व के धनी श्री मोहित गोस्वामी अपने आपमें एक मिसाल व्यक्तित्व के स्वामी है. वर्तमान शिक्षा पद्धति के बारे में उनका कहना है शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है. शिक्षक अपने कर्तव्य को भूलकर पैसा कमाना अपना कर्तव्य समझते है. आज केवल पैसा कमाने के लिए परचून की दुकान की तरह खुल रहे है. शिक्षण के क्षेत्र में एक अदभूत मिसाल कायम करने वाली श्रीमती सपना गोस्वामी अपने विद्यालय में अभिभावकों के साथ ही साथ बच्चों व शिक्षिकाओं को भी भरपूर सहयोग देती है. उनकी समस्याओं को स्वयं की समस्या मानकर उनका समाधान करने के लिए हर समय तत्पर रहती है. अगर यह कहा जाए कि वह एक आदर्श प्रधानाचार्या है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी.

दुबई में बनेगी एक किमी ऊंची इमारत

दुबई. खूबसूरती और गगनचुबी इमारतों में नंबर वन बनने की चाह में दुबई में २७० हेक्टेयर क्षेत्र में एक किलोमीटर ऊंची इमारत बनाने का ऐलान हुआ है. दुनिया की सबसे ऊंची इस इमारत में २०० मंजिले होगी. यह इमारत मौजूदा वक्त की ८१८ मीटर के बुर्ज दुबई टावर से सबसे ऊंची इमारत होने का खिताब छीन लेगी. इसमें लगभग १४० बिलियम दिरहम खर्च होने का अनुमान है.

संकीर्तन प्रेमी संत महात्मा भोली बाबा

- संकीर्तन एक प्रकार का योग है. योगी योग के द्वारा अपने चित्त को भगवान के साथ जोड़ते हैं तो कीर्तनकार भी अपना ध्यान भगवत् चरण में अर्पित करता है.
- भोली बाबा बड़े बड़े यज्ञों का आयोजन स्वयं किया करते थे
- हजारों की संख्या में जनता शांति पूर्वक इनके आयोजनों में भाग लेती थी. मंच पर इनका कीर्तन होता था, तब श्रोता शांत एवं दत्तचित्र होकर आनन्द का लाभ उठाते और फिर बाबा की जयकार होती.
- वे कहते थे कि मेरा आश्रम बौंसी का मधुसूधन भगवान का मंदिर है.

डॉ0 नरेश पाण्डेय'चकोर'

सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए संकीर्तन का जीवन में बड़ा महत्व है. संकीर्तन के माध्यम से जीवन सुस्कृत होता है और मानसिक संतुष्टि के साथ-साथ भगवत्प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है. संकीर्तन लौकिक ओश्र पारलौकिक दोनों ही सुख देता है. भगवदभजन में तन्मयता होने के कारण मानव को भगवान के समीप पहुँचने में सुगमता होती है. संकीर्तन एक प्रकार का योग है. योगी योग के द्वारा अपने चित्त को भगवान के साथ जोड़ते हैं तो कीर्तनकार भी अपना ध्यान भगवत् चरण में अर्पित करता है. जब भगवत संकीर्तन के प्रवाह में डूब जाते है. तब उन्हें दुनियाँ की सुधि-बुधि नहीं रह जाती. वे उस समय भगवत् साक्षात्कार को प्राप्त करते है. यह स्थिति मनुष्य सरलता से नहीं कर पाता. इसके लिये सतत संकीर्तन और सत्संग की आवश्यकता होती है. इसके अभ्यास से आदत पड़ जाती है, आदत से आत्मानुभूति होती है और उससे परम सुख की प्राप्ति होती है.
संकीर्तन में सबको रसानुभूति नहीं होती. इसके लिए भगवतकृपा की आवश्यकता होती है. यह संस्कार पर निर्भर करता है. संस्कार दो तरह से बनता है-एक जन्मजात संस्कार, दूसरा संगति से बना हुआ. इसलिये जीवन में यह आवश्यक है कि संत महात्मा और कीर्तनाचार्यो की संगति की जाये और सतत भगन्नाम संकीर्तन किया जाय. फिर तो क्या कहना. 'क्या सुख है हरि भजन में, कोई गाकर देख ले' हरिचर्चा या हरिकीर्तन में अपार सुख है, अमृत सा रस है. चैतन्य महाप्रभु, नामदेव, तुकाराम आदि भक्तों ने कीर्तन के महत्व को समझा और इसके माध्यम से अपना जीवन सार्थक बनाया. कलियुग में कीर्तन का बड़ा महत्व है. कलियुग केवल हरिगुन गाहा/सुमिरत नर पावहिं भव थाहा।।

श्री नामानुरागी, कीर्तन के मर्मज्ञ, आजन्म ब्रहमचारी भगवतचर्चा में तत्तलीन, यज्ञादि धार्मिक कार्यो के अनुष्ठाता जनपद के मंदराचल स्थित फागा नामक गॉव में एक ब्राहमण कुल में सन् १६०३ ई० भाद्रपद कृष्णाष्टमी के दिन हुआ था. इनका पूरा नाम श्री भोलानाथ मिश्र था. इनके पिता श्री जहौरी मिश्र एक मैथिल पंडित थे. इनकी मॉ की मृत्यु इनकी बाल्यवस्था में ही हो गई थी. ये मॉ-बाप के एकलौते पुत्र थे. इनका बाल्यकाल बड़ा ही कष्टमय रहा. सम्भवतः यही कष्टमय जीवन इन्हें भगवन्नाम संकीर्तन की ओर अग्रसर होने का कारण बना. प्रारम्भ में श्री बाबा दूसरों की कीर्तन मंडली में घूमते थे. बाद में इन्होंने स्वतंत्र कीर्तन मंडली तैयार की. इनका कीर्तन भाव से ओतप्रोत रसमयी भगवत्-भक्ति जगाने वाला एवं प्रभावोत्पादक होता था. फलतः बाबा के कीर्तन की धूम चारों ओर मच गयी. अंग जनपद में इनकी चर्चा गॉव-गॉव में होने लगी. इसके बाद ये अखिल भारतीय श्रीरुपकला-हरिनाम -यश संकीर्तन सम्मेलन में तथा अन्य महत्वपूर्ण धार्मिक सम्मेलनों में सादर आमंत्रित किये जाने लगे और वहॉ इनकी सेवा देश के इने गिने महात्माओं की तरह होने लगी. ये मन्दार के महात्मा भोली बाबा के नाम से पूरे देश में कीर्तन-प्रेमियों के बीच जाने जाने लगे. अखण्ड कीर्तन में तो यहे अग्रण्य थे. ये बौस से बैद्यनाथ धाम पैदल कीर्तन करते हुए जाते. कीर्तन मंडली एवं अपने शिष्यों के साथ चारों धामों की यात्रा करना आदि इनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाए है. इनकी इन धार्मिक यात्राओं के संस्मरण और चमत्कारों की कहानी हमारे गुरुभाई श्री हलधरनाथ पाण्डेय एवं श्री हरेन्द्र नाथ झा सुनाते हैं, तब आनन्दातिरेक से श्रोता रोमांचित हो जाते हैं.

श्री भोली बाबा बड़े बड़े यज्ञों का आयोजन स्वयं किया करते थे या ऐसे आयोजनों के मार्गदर्शक होते थे. इनके यज्ञो में मात्र हवनकुण्ड में यज्ञ ही नहीं होता था, अपिलु जब तक यज्ञ होता था, तब तक सीताराम नाम का कीर्तन, श्री हनुमाना चालीसा का अखण्ड पाठ,

संत महात्माओं का प्रवचन-कीर्तन और रात्रि में झॉकी लीला एवं रासलीला के उत्सव भी होते रहते थे. हजारों की संख्या में जनता शांति पूर्वक इनके आयोजनों में भाग लेती थी. मंच पर इनका कीर्तन होता था, तब श्रोता शांत एवं दत्तचित्र होकर आनन्द का लाभ उठाते और फिर बाबा की जयकार होती.

बाबा सभी संत-महात्माओं को बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे. यही कारण था कि जब इन्होंने ३१ अक्टूबर १९८१ ई० को वाराणसी में अपने नश्वर शरीर का त्याग किया, तब इनको गंगा मैया की गोद में जल-समाधि देने के लिए स्वयं श्री श्री १०८ स्वामी करपात्री जी महाराज पधारे थे. यहॉ इस अवसर पर और भी अनेक संत महात्मा उपस्थित थे. वाराणसी, सहित कई अन्य स्थानों में भंडारा हुआ और हजारों ब्राहमणो का भोज कराया गया.

बाबा ने अपने जीवन काल में कोई आश्रम या मठ नहीं बनवाया. हजारों की संख्या में इनके शिष्य बाबा से आश्रमादि बनवाने की अनुमति मॉगते थे किन्तु कंचन ओर कामिनी से दूर रहने वाले बाबा अपने शिष्यों को आश्रम बनाने या रुपया जमा करने या स्मारक बनाने से सदैव मना करते थे. वे कहते थे कि मेरा आश्रम बौंसी का मधुसूधन भगवान का मंदिर है. इस मंदिर में प्रत्येक वर्ष बाबा के शिष्य उत्सव मनाते है और अखण्ड कीर्तन व दरिद्र नारायण का भोज होता है.

एक बार श्री श्री १०८ सीताराम शरण जी महाराज, श्री श्रीमन्नारायण जी ने बाबा के संबंध में बताया कि श्री लक्ष्मण जी महाराज कहते थे कि बाबा विलक्षण संत थे. ऐसे संत कभी-कभी ही पृथ्वी पर अवतरित होते हैं. वे बड़े ही नामानुरागी संत थे. सचमुच बाबा ने अपने पीछे कुछ नहीं छोड़ा.

१६वॉअ.भा.हिन्दी साहित्य समारोह

गाजियाबाद. १ व २ नवंबर को १६वें अखिल भारतीय हिंदी साहित्य समारोह का आयोजन किया गया. समारोह का उद्घाटन पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि ने, अध्यक्षता डॉ. राष्ट्रबंधु ने तथा विषय परिवर्तन डॉ० हरिसिंह पाल ने किया. आलेख वाचन एन.एल.गोसाइ, डॉ.के.मोहनन पिल्लै, डॉ० ताराकांत रमाकांत उपासनी, डॉ०मधुकर अष्ठाना, आदि ने किया. हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के अध्यक्ष श्री भगवती प्रसाद देवपुरा ने कथनी और करनी में समानता पर बल दिया. डॉ० राष्टबंधु ने पर्यावरण से बच्चों को जोड़ने एवं इसके हानि लाभ को उन्हें सरल सुबोध भाषा में परिचित कराने का आहवान किया. मुख्यअतिथि डॉ० शशि ने समतामूलक पर्यावरण से सीख लेते हुए समतामूलक समाज और साहित्य सृजन करने का आहवान किया.

दूसरे में सत्र में सांस्कृतिक संध्या, व काव्य संध्या का आयोजन किया गया. जिसमें कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए.

समापन सत्र के मुख्यअतिथि पूर्व राज्यपाल डॉ.भीष्म नारायण सिंह, प्रख्यात शिक्षाविद, साहित्यकार तथा पूर्व सांसद डॉ० रत्नाकर पांडेय, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष डॉ० रामशरण जोशी थे. इस अवसर पर उत्तर प्रदेश, शब्द-शब्द है मोती का लोकार्पण भी किया गया. श्री भगवती प्रसाद देवपुरा को शिखर सम्मान-२००८, डॉ० रामअवतार शर्मा को 'समाज रत्न', श्री राजकुमार सचान को साहित्य साधक, श्री राधाकांत भारती-दिल्ली को कबीर सम्मान, डॉ०देवेन्द्र आर्य-गाजियाबाद, श्री मधुकर अष्ठाना-लखनऊ को निराला स्मृति सम्मान, श्री कृष्ण चन्द्र तिवारी-कानपुर को श्री हनुमानदत्त स्मृति सम्मान, डॉ० स्वामी प्यारी कौड़ा, आगरा को डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल स्मृति सम्मान, श्रीमती सीता श्रीवास्तव-दिल्ली को सुभद्राकुमारी चौहान, श्रीमती सुदर्शन रत्नाकर-फरीदाबाद को महादेवी वर्मा सम्मान, डॉ० के.मोहनन पिल्लै-केरल को राष्ट्रभाषा सरंक्षक, श्री टिलेकर दत्तात्रय माघ वराव-पुणे को भाषा गौरव, श्री श्याम देवपुरा-श्रीनाथद्वारा को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, डॉ०बीरेन्द्र कुमार दुबे-जबलपुर, डॉ० भैरुलाल गर्ग, भीलवाड़ा, श्री घमंडीलाल अग्रवाल-गुड़गावं, डॉ० अरुण प्रकाश ढौडियाल-दिल्ली को वरिष्ठ राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान, श्री ज्ञानचन्द्र मर्मज्ञ-बेगलौर, श्री कृष्ण मुरारी सिंह किसान-शेखपुरा, डॉ० देव नारायण चौधरी-भागलपुर, एम.एस.जौहर-देहरादून, श्री अजय शर्मा- फरीदाबाद, श्रीमती लक्ष्मी आर्य-पिथौरागढ़, श्रीमती रश्मि सनन को राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान, डॉ० अकीला मेहबूब शेख, श्री निर्मल कुमार औदिच्य, डॉ० सरोज अरोरा, श्रीमती उर्मिला औदिच्य, श्री सतीश भाटिया श्री अम्बादत्त भट्ट, श्री समीर कुमार मंडल, श्री विनय कंसल को राष्ट्र गौरव सम्मान डॉ० विवेक भार्गव, डॉ० शमीम देवबंदी, श्री राहुल रोहिताश्व, इं. योगेश त्रिपाठी, डॉ. आलोक त्रिपाठी, डॉ. माया त्रिपाठी, श्री संत शरण त्रिपाठी को युवा राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान प्रदान किया गया.

दो दिवसीय सफल आयोजन में सर्वश्री डॉ०रमा सिंह, अशोक श्रीवास्तव, अखिलेश दत्त, के.पी.यादव, एस.पी. थपलियाल, कुलदीप, विकास मिश्र की सक्रियता रही. डॉ० उमाशंकर मिश्र ने आभार प्रकट किया.

स्नेह बाल मंच

बाल दिवस पर विशेष

ऐसे थे पं० नेहरु

डॉ. मनमोहन सिंह, मोहाली

मानवीयता की भावना

पं. जवाहर लाल नेहरु अपनी कार से कहीं जा रहे थे, रास्ते में उन्होंने देखा कि एक लड़का बस से टकरा कर सड़क पर गिर पड़ा है, और खून से लथपथ है.

पंडित जी ने अपनी कार रुकवाई और उस लड़के के पास आ गये. वहां काफी लोग उस लड़के को घेर कर खड़े थे. पंडितजी को देखते ही उन्होंने जय–जय कार षुरु कर दी. पंडितजी को गुस्सा आ गया, वे बोले–बंद करो यह जयकार', बच्चा घायल पड़ा है, आपको पहले इसे अस्पताल ले जाना चाहिए, इतना कर हर उन्होंने अपनी कार में उस लड़के को लिटाया और अस्पताल पहुंचा कर ही वे गंतव्य स्थल की ओर रवाना हुए.

कार्य की भावना जगाई

बात उन दिनों की है जब दामोदर नदी घाटी योजना का कार्य चल रहा था और उसके निरीक्षण हेतु एक स्थल पर पं0 जवाहर लाल नेहरु गये हुए थे.

उस स्थान पर कार्यरत करीब तीन सौ मजदूरों को नेहरुजी ने इकट्ठा किया और उनके बीच में बैठकर वे उन्हें कुछ समझाने लगे. बातचीत में नेहरु जी ने पूछा–'तुम क्या रहे हो?' 'हम मिट्टी ढो रहे है' मजदूरों का उत्तर था. 'लेकिन क्यों?' 'पेट भरने के लिए'ए मजदूरों ने फिर जवाब दिया. इसके अलावा भी कोई कारण है? 'मालूम नहीं? नेहरु जी के फिर पूछने पर उनका जवाब था. तब नेहरु जी ने दामोदर घाटी योजना और उसके राश्ट्रीय महत्व को समझाया.

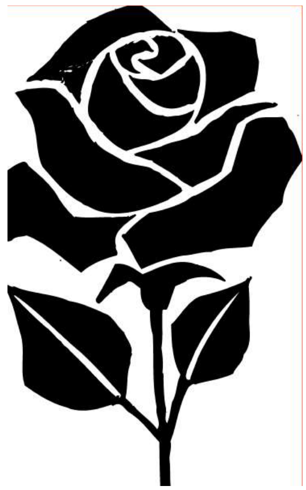

मजदूरों को समझ में आ गया था कि पेट भरने के अलावा नागरिकों का राष्ट्र के प्रति भी कुछ कर्तव्य होता है और वे दुगुने जोष से उस कार्य में लग गये. मजदूर समझ गये थे कि उनका भी इस राश्ट्रीय योजना में योगदान हो सकता है क्योंकि करोड़ो लोगों के भले हेतु यह योजना है. अतः षाम को पैसे लेकर घर जाना ही पर्याप्त नहीं है. इस प्रकार मजदूर नेहरुजी के भाशण से काफी प्रभावित हुए एवं वे बड़ी मुस्तैदी से कार्य में हाथ बंटाने लगे.

एक पत्रकार ने जब नेहरु जी से पूछा कि आपको मजदूरों के बीच में बैठकर उनका समय लेने से क्या मिला? उन्होंने बड़े षांत भाव से जवाब दिया कि यदि हमारे देष के अभियंतागण ऐसी तमाम बाते समय–समय पर मजदूरों को बताया करें तो श्रमिक वर्ग उस कार्य में रूचि से अपना हाथ बंटाने लगेंगे और बड़े चाव और सूझ–बूझ से अपना ही कार्य समझ कर करेंगें.

मां का प्यार

उन दिनों कमला नेहरु बीमार थी और स्विटजरलैंड में इलाज हेतु भर्ती थी. नेहरुजी भी उन दिनों उनके पास थे. भारत से एक तार आया षीघ्र चले आओ. भारत माता के लाल मां की बेड़ियों को काटने के लिए तुम्हें आहवान करते है. तार पढ़ते ही नेहरुजी की ऑखों के सामने अंधेरा छा गया. एक तरफ पत्नी मरणासन्न, दूसरी तरफ राश्ट्रीयता की भावना एवं भारत माता की पुकार. वे कुछ सोच में मग्न हो गये. उनकी चिंता को कमलाजी ने भांप लिया और बोली, मेरी चिंता छोड़िये, मुझसे ज्यादा भारत माता को आपकी जरूरत है. नेहरुजी फिर सोच में पड़ गये. अंत में उनके मातृभूमि के प्रेम की विजय हुई. नेहरुजी इधर भारत आ गये, और उधर पता है क्या हुआ? कमला नेहरु सदा–सदा के लिए चल बसी थी. धन्य है ऐसा मातृभूमि का प्यार.

प्रिय भैया/बहिनों

आप लोगों को चाचा नेहरु के बारे में तो जानते ही होंगे. आइए इस बार आप लोगों को चाचा नेहरु के बारे में कुछ खास बातें बताती हुं. आप लोगों को पसंद आये तो अपनी बहन को जरुर लिखिएगा.

आपकी बहन

संस्कृति 'गोकुल'

भूल सुधार

नवंबर 2008 के अंक में स्नेह बाल मंच में छपी कहॉनी उल्लू का वादा में लेखक राजेन्द्र कृष्ण श्रीवास्तव, लखनऊ के स्थान पर अनुराग मिश्र 'गैर', बुलन्दरशहर पढ़ा जाए. कष्ट के लिए खेद है.

कविताएं

मानवता के दीप

नहीं कहेंगे हम
आप न जलाएँ असंख्य दीपक
घर में, बाहर में, न करें
आतिशबाजी
दीपावली के त्यौहार में
लेकिन कहेंगे हम यह अवश्य
कि आप जलाएँ कम से कम एक
दीपक
अपने मन में
संस्कार के बिरवा तले
ताकि होता रहे कण-कण आलौकित
उसके सौम्य प्रकाश में
और होता रहे अकम्पित लौ पर
स्वार्थ का हर पतंगा स्वाहा
हंस-हंस कर जलती रहे
सदाचार के तेल से
प्रेम की अखण्ड ज्योति
देने यह संदेश
कि यही है मानवता का प्रतीक
इसलिए, कभी बुझने न पाए
अंतरात्मा का यह दीप
धोखे से या आकांक्षा के
किसी तीव्र झोंके से।

अंधकार के बीज

अंधेरो से लड़ना चाहते हो?
तो आओ
अपने भीतर की मशालें
जलाये।
आदमी के भीतर
जब मशालें जलने लगती हैं
तब समय के इतिहास की इबारतें
खुद-ब-खुद बदलने लगती हैं।
शेर मृग छौना हो जाता है
अंधकार बौना हो जाता है
समय के चित्रफलक पर
गलत तस्वीरें मत खींचो
ज्योति-पर्व पर अंधकार के बीज मत
बोओ
तुम्हारे भीतर एक सरसब्ज बाग है
उसे सीचों।
तुम पर समूचे भविष्य की आस्था है
और जिंदगी
महज अंधेरों का घोषणा-पत्र नहीं
रूप है, रस है, गंध है
आदमी आत्मा का छंद है।
राजकुमार जैन 'राजन', राजस्थान
++++++++++++++++++

ग़ज़ले

तजकर अवसरवादी सोच,
मज़लूमों के आँसू पोढ़।
टेढ़ी मेढ़ी जीवन राह,
क्यूँ न आये पग में मोच।
पदलोलुपता, अवसरवाद
प्रजातंत्र को रहे दबोच
'मिथ्या' का करते गुणगान,
सच कहने में क्यूं संकोच?
निश्ठुर जीवन जीते लोग,
षेश कहां भावों में लोच।
+++++++++++++++++++.
मुझ पर तेरी ये कैसी नज़र हो गयी,
तश्नगी और भी तेज़तर हो गयी।
ज़ीस्त की राह में हम है तनहॉ कहॉ?
तंगदस्ती मिरी हम सफर हो गयी।
सोगये आसमॉ की सितारे सभी,
दास्तॉ कहते-कहते सहर हो गयी।
उनको रूदादे-ग़म जब सुनाने चले
इब्तिदा होते ही ऑख तर हो गयी।
चाहे तनवीर क्यू हम खुशी की करें?
ज़िन्दगी रंजो-ग़म में बसर हो गयी।
जलाल अहमद खॉ, बाराबंकी,उ.प्र.
++++++++++++++++++++

खोजूॅगा

सारी उमर तुम्हें खोजूॅगा
पवन पृष्ठ पर लिख लिख पतियॉ
सारी उमर तुम्हें भेजूॅगा
+ + + + + + + + + + + + +
दूर नहीं हो तुम जीवन से
विलग नहीं हो तुम तन-मन से
अगर सत्य है तो इतना है
श्वास बिहारी! दूर नयन से
ओ परोक्ष के रूप तुम्हारे
युग से तृषित अधर पी लूॅगा
सारी उमर तुम्हें खोजूॅगा
अवनी से अम्बर तक तुम हो
शाश्वत से नष्वर तक तुम हो
किरन तुम्हीं सूरज भी तुम हो
सृजन प्रलय के स्वर तक तुम हो
नीलकंठ! यदि देर हुई तो
मंथन-रतन-जहर पी लूंगा
सारी उमर तुम्हें खोजूंगा
अहम् कपाट लगे द्वारे पर
कर कर विनय सदा हारे स्वर
पावों की गति पापों तक है
पुण्य द्वार से दुत्कारें कर
दर्षन की यदि आश मिले तो
भगवन एक पहर जी लूंगा
सारी उमर तुम्हें खोजूॅगा
डॉ० राधेश्याम योगी, जालौन,उ.प्र.
++++++++++++++++++++

मन-दर्पण

अवगुंठन करता मन-दर्पण
मनमोहक चंचल प्रिय चितवन,
मन लुभा रही है क्षण प्रतिक्षण।
ऊषा सी लाली अधरों पर,
सरसिज सम झलक कपोलों पर।।

मस्तक पर बिंदी रही चमक,
माथे पर बेंदा रहा दमक।
कानों पर कुंडल रहे लटक,
नासा पर नथनी रही झलक।।

कंठा की शोभा अति अनुपम,
परिधान लग रहे सुन्दर तम।
करधनी कटि का आकर्षण,
हाथों में शोभित नव कंगन।।

पैरों में पायल की रूनझुन
नख-शिख श्रृंगारित शुभ्रबदन।
सौन्दर्य-स्नेहिल स्पर्शन
अवगुंठन करता मनदर्पण।।
सुगन चन्द्र नलिन, गुना, म.प्र.

साहित्य समाचार

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान का चुनाव सम्पन्न

गत दिनों विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की वर्ष २००८-०६ की कार्यकारिणी का चुनाव सम्पन्न हुआ. चुनाव अधिकारी श्री बी.डी. उपाध्याय एवं मो. तारिक ने बताया कि मुख्य कार्यकारिणी में डॉ० राज बुद्धिराजा, नई दिल्ली को सरंक्षक, सुश्री विजय लक्ष्मी विभा, इलाहाबाद को कार्यकारी अध यक्ष, डॉ० तारा सिंह, मुंबई, को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, डॉ० मालती, नई दिल्ली व डॉ० वीरेन्द्र दुबे, जबलपुर को उपाध यक्ष, गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, इलाहाबाद को सचिव, ईश्वर शरण शुक्ल, बहराइच को संयुक्त सचिव, डॉ० वी.पी.सिंह, मुंबई, एस.बी.मुरकुटे, बेलगांव, कर्नाटक, राजकिशोर भारती, इलाहाबाद, हेमचन्द्र श्रीवास्तव, इलाहाबाद, मो० अन्सार शिल्पी, कौशाम्बी, मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी, सोनभद्र, को कार्यसमिति सदस्य एवं डी.पी.उपाध्याय, बलिया एवं कैलाश त्रिपाठी, औरैया, वंशीराम शर्मा, गुड़गाव, हरियाणा को विशेष आमंत्रित सदस्य चयनित किया गया.

महिला शाखा में सुश्री बी.एस.शांताबाई, बगलौर को संरक्षक, सुश्री अंजु दुआ जेमिनी, फरीदाबाद, डॉ०सुमि ओम शर्मा, मुंबई को उपाध्यक्ष, श्रीमती जया, इलाहाबाद को सचिव, श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली, रायबरेली, श्रीमती ऊषा देवी,सिद्धार्थ नगर, श्रीमती पुष्पा, गोरखपुर, श्रीमती संगीता श्रीवास्तव, इलाहाबाद को कार्यसमिति सदस्य चयनित किया गया.

युवा शाखा में सुधीर कुमार, इन्दौर, उपाध्यक्ष, कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव, इलाहाबाद, संयुक्त सचिव, अशोक गुप्ता, अम्बेडकर नगर, स्नेहाश्रम सचिव, राजेश सिंह, इलाहाबाद, प्रसार सचिव, एस.के.तिवारी, इलाहाबाद, मनोज कुमार दुबे, सिद्धार्थ नगर, प्रमोद तिवारी, नई दिल्ली को कार्यसमिति सदस्य चयनित किया गया. वर्तमान कार्यकारिणी का कार्यकाल नवम्बर २००८ से अक्टूबर २००६ तक रहेगा.

शबनम साहित्य परिषद द्वारा सम्मान

सोजत सिटी, राजस्थान की शबनम साहित्य परिषद द्वारा साहित्य सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किये जाने वाले राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान-२००८ मानद उपाधिक की घोषणा कर दी गई है.

संस्था के अध्यक्ष अब्दुल समद राही ने बताया कि काव्य लेखन के लिए संस्था का श्रेष्ठ निजाम उस्ताद सम्मान देवेन्द्र कुमार मिश्रा, छिन्दवाड़ा, नरेन्द्र राजगुरु अजमेर, फातिमा स्मृति सम्मान सुकीर्ति भटनागर, पटियाला, डॉ० वर्षा पुनवटकर बरखा, बर्धा, एवं ग़ज़ल लेखन के लिए डॉ० अशोक पाण्डेय, बहराइच, लायन बीरेन्द्र कुमार दुबे-जबलपुर,हरिचरण वारिज-भोपाल, एस.के.जैन'-लोगपुरिया, ज्ञानचंद मर्मज्ञ-बगलौर, साहित्य लेखन के लिए साहित्य सिद्धहस्त सम्मान-अनोखी लाल कोठारी, उदयपुर, डॉ. राजीवरंजन उपाध्याय, फैजाबाद, सुमति कुमार जैन-अलवर, एवं साहित्य सेवा के लिए साहित्य महाराणा सम्मान त्रिपाठी कैलाश आजाद, सांगली, कलागुरु सम्मान चॉद मोहम्मद घोसी, मेड़ता, साहित्य शिरोमणि सम्मान डॉ० भगवान सहाय श्रीवास्तव-इलाहाबाद, भारतीय गौरव रत्न महेन्द्र प्रताप पाण्डेय-अल्मोड़ा, डॉ० इकबाल अहमद मंसूरी-खीरी, काव्य रत्न तरुण कुमार सोनी को अलंकृत किया गया है.

डॉ0 तारा सिंह अलंकृत

मुम्बई की वरिष्ठ छायावादी कवयित्री डॉ तारा सिंह को भू. पू. प्रधानमंत्री स्व० राजीव गांधी के जन्म दिवस पर १८ अगस्त को दिल्ली में आयोजित एक विशेष समारोह में राजीव गांधी अवार्ड से अलंकृत किया गया. अवार्ड स्वरुप स्व० राजीव गांधी की स्वर्ण जड़ित ट्रॉफी प्रदान किया गया. इसी कड़ी में इंट्रनेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली द्वारा साहित्यिक उपलब्धि एवं राष्ट्रहितकारी सृजन के लिए बेस्ट सिटिजन अवार्ड २००८, आसरा समिति द्वारा ब्रज गौरव मानद उपाधि, हिन्दी भाषा साहित्य परिषद द्वारा निराला स्मृति रजत सम्मान, आरसी प्रसाद स्मृति रजत सम्मान, भारतेन्दु हरिश्चद्र स्मृति रजन सम्मान प्रदान किया गया है.

डॉ० अशोक गुलशन को १८१ सम्मान

बहराचइच के प्रतिष्ठित कवि, पंजीकृत फिल्म लेखक तथा चिकित्साधिकारी डॉ० अशोक पाण्डेय गुलशन को अहमदाबाद, उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़, आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, दिल्ली, हरियाणा, कर्नाटक, झारखण्ड, मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश से १८१ सम्मान/पुरस्कार एवं उपाधियॉ प्राप्त हो चुकी है. डॉ० गुलशन को प्राप्त सम्मानो में राष्ट्र सेचतक उपाधि, राष्ट्रीय काव्य कृति सम्मान, सुर साधना, सहस्त्राब्दी सम्मान, रा०प्रतिभा सम्मान, भारत-भारती अलंकारा, काव्य विभूति, राष्ट्र गौरव, राष्ट्रभाषा गौरव सम्मान, राष्ट्र भाषा रत्न, गजलरत्न उपाधि, काव्य कौस्तुभ उपाधि प्रमुख है.

बहुविधायी रचनाकार डॉ० गुलशन को चिकित्सा के क्षेत्र में भी १८ प्रशंसा-पत्र प्राप्त हुए है. उक्त जानकारी डॉ०सुमन पाण्डेय, पूर्व संयोजिका-सांस्कृतिक संस्थान ने दी.

स्वास्थ्य

धूम्रपान से थकान नहीं मिटती

सिगरेट-शराब आज की तथाकथित प्रगतिशील और सभ्य पीढ़ी की पहचान बन गयी है. धूम्रपान और मदिरापान पर दी गयी नसीहत उन्हें अव्यवहारिक प्रवचन लगते है, वे सिर झटक देते हैं. पैसेवाले युवक-युवतियों को लगता है-यह आर्थिक दृष्टि से विपन्न लोगों या फिर इस शिखर तक नहीं पहुंच पाने वाले लोगों का व्यर्थ का प्रलाप है. और वे जिंदगी के सबसे बड़े सच को धुएं में उड़ा देते है.

कुछ चिंतक लोग इसे सृजन का सारथी मानते है, लेकिन, यह अति भ्रामक तथ्य है. इस बात में तनिक भी सच्चाई नहीं है कि सिगरेट का धुआं छोड़ना एकाग्रचित होने मे मदद करता है. यह शरीर की थकान नहीं मिटाता. यह वाशिंगटन कालेज के मनोवैज्ञानिकों ने बहुत पहले ही साबित कर दिया है. धूम्रपान से लाभ तो कुछ नहीं, मगर हानि क्या है जानिए-

✿ धूम्रपान करने वालों का मस्तिष्क स्वस्थ मस्तिष्क की अपेक्षा तीन गुना अधिक दुष्परिणामों का शिकार होता है. दरअसल धूम्रपान करने वाला व्यक्ति अपने मस्तिष्क एवं तंत्रिकातंत्र पर एक दबाव की स्थिति पैदा कर स्वयं को थकान रहित महसूस करने की कोशिश करता है. यही बात मस्तिष्क की एकाग्रता बनाने में भी लागू होती है.

✿ ऐसा करने से मस्तिष्क एवं तंत्रिकातंत्र की स्वाभाविक प्रक्रिया पर अवरोध उत्पन्न हो जाता है. परिणाम स्वरूप उस व्यक्ति की सोचने-समझने की क्षमता भी प्रभावित होती है. स्मरणशक्ति सीमित हो जाती है.

✿ धूम्रपान से दमा को बढ़ावा मिलता है. इसमें शामिल कार्बन मोनोक्साइड और निकोटिन श्वासनली की ग्रंथियों में जमा होकर उन्हें सख्त बनाते हैं. गले में फिर खराश उत्पन्न होती है, बलगम जमाव होता है और दमा का कारण बनता है और सबसे बड़ी बात यह परिवार का माहौल बिगाड़ता है.

++++++++++++++++++++

अति गुणकारी आंवला

आंवले का प्रयोग प्राचीन काल से ही होता आया है. यह चटनी, मुरब्बे, अचार आदि के रूप में सेवन किया जाता है. इसे आयुर्वेद का प्रसिद्ध टॉनिक माना जाता है. इसमें विटामिन सी भरपूर मात्रा में होता है जो शरीर में आरोग्य शक्ति को बढ़ाता है. त्वचा, आंखो, बालों आदि के लिए यह अत्यधिक लाभकारी है.

✿ दस्त होने पर सूखा आंवला पीस लें. इसमें बराबर मात्रा में काला नमक मिलाकर पानी के साथ लें.

✿ नकसीर होने पर नाक में आंवले का रस टपकाना हितकारी है. आंवले को पीसकर सिर पर उसका लेप करने से यह समस्या दूर होती है.

✿ दो चम्मच पिसा हुआ आंवला, दो चम्मच पिसा हुआ काला जीरा व पांच चम्मच पिस हुआ काला जीरा व पांच चम्मच पीसी हुई मिश्री तीनों को मिलाकर चूर्ण बना लें. जो बच्चे बिस्तर में पेशाब करते हो, उन्हें दिन में तीन बार आधा चम्मच चूर्ण खिलाए.

कैसा साबुन करें इस्तेमाल

साबुन का इस्तेमाल हम रोजाना करते हैं, लेकिन आम तौर पर यह नहीं जान पाते कि किस तरह के साबुन हमें नुकसान पहुँचाते है और किस तरह के फायदे. खरीदारी करते समय भी हम विज्ञापन या साबुन की कीमत का ध्यान रखते हैं, साबुन की विशेषताओं का नहीं. पर ऐसा करना खतरे से खाली नहीं है. क्या यह कम बड़ा खतरा नहीं कि बिना जाने-समझे लगातार ऐसे साबुन का इस्तेमाल किया जाए जो त्वचा को नुकसान पहुंचाते हो. वैसे विज्ञापनों के चलते यह तो ज्यादातर लोग जानते है कि आजकल बाजार में हर किसी के लिए अलग साबुन उपलब्ध है. महिलाओं व पुरूषों के लिए अलग और बच्चों के लिए अलग. कपड़ें धोन से लेकर दाग हटाने और चेहरा धोने से लेकर हाथ धोने तक का साबुन द्रव और केक के रूप में बाजार में मिल जाता है. अगर नहाने के साबुन मिलते है खुशबूदार, क्रीम, विटामिन युक्त और औषधियुक्त. इनमें से पहले यानी खुशबूदार साबुन का इस्तेमाल उन्हीं लोगों को ज्यादा करना चाहिए, जिन्हें ज्यादा पसीना बहने या चिपचिपाहट की शिकायत रहती है.

+++++++++++++++++++++

तुलसी जयन्ती समारोह सम्पन्न

बिहार की प्रतिष्ठित सांस्कृतिक संस्था प्रज्ञा समिति का तुलसी जयन्ती समारोह बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन भवन, पटना में सम्पन्न हुआ. समारोह का उद्घाटन लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण मंत्री श्री अश्वनी कुमार चौबे ने किया तथा मुख्य अतिथि बिहार के पूर्व मुख्य संचिव एवं नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति श्री विजय शंकर दुबे थे. संचालन डॉ० नरेश पाण्डेय चकोर, अतिथियों का स्वागत डॉ० शिववंश पाण्डेय, एवं प्रतिवेदन श्री राजनाथ मिश्रा ने किया. कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ० जगदीश पाण्डेय ने की. समारोह को पं. हरिद्वार पाण्डेय, श्री श्रीराम तिवारी, आदि ने सम्बोधित किया

चिट्ठी आई है

आपके संपादकीय ने प्रभावित किया

एक साहित्यिक मित्र संजय चतुर्वेदी, के यहां से जुलाई का अंक प्राप्त हुआ. इस अंक में आपके सम्पादकीय ने विशेष प्रभावित किया लेकिन इस देश के नेताओं का क्या किया जाए. इसका हल जनता के पास ही है लेकिन जनता भी जातिवाद की राजनीति में फंसी हुई है. इसके अलावा परिचर्चा 'आतंकवाद कारण और निवारण' में सभी लेखको के विचार ठीक थे लेकिन हम जैसा चाहते हैं वैसा क्या संभव है. एक तरफ सिमी पर प्रतिबंध लगता है वही दूसरी तरफ हमारे नेता उसकी तरफदारी करते हैं. आखिर क्या हो गया है हमारे देश के नेताओं को उनकी ऑखों का पानी मर गया है? देश आज ऐसे मोड़ पर खड़ा है कि अगर शीघ्र ही आतंकवाद की समस्या पर राजनीति से दूर रहकर समाधान नहीं किया गया तो देश में शीत युद्ध के प्रबल आसार है. इसके लिए निश्चय ही त्रुटिकरण की राजनीति करने वाले नेता ही जिम्मेदार होंगे. मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि इन नेताओं को तो सद्‌बुद्धि दे ही साथ ही हिन्दूओं, हिन्दुत्व की बात करने वालों को भी सद्‌बुद्धि दें.

कुल मिलाकर संपूर्ण अंक सराहनीय रहा. आशा है यह सिलसिला जारी रहेगा.

सुनील कुमार चौहार्न', बदायूँ, उ०प्र०

+++++++++++++++++++++++++

मैं आपके श्रम और साहित्य निष्ठा की सराहना करती हूँ

विश्व स्नेह समाज का फरवरी/मार्च ०८ अंक प्राप्त हुआ. छायावादी कवयित्री डॉ. तारा सिंह पर निकाला गया विशेषांक अपने आप में एक लेखिका कवयित्री के समग्र कर्तृत्व का परिचय प्रस्तुत करता एक दस्तावेज ही है. डॉ० तारा सिंह से किसी अधिवेशन के अवसर पर लखनऊ या इलाहाबाद में भेंट हुई थी लगभग दो दशक पूर्व. पत्रिका के मुखपृष्ठ पर उनका चित्र देख कर मुझे अनेक विगत घटनाओं का स्मरण हो आया. अंक का प्रत्येक लेख मैं बड़े मनोयोग से पढ़ गई और बड़ी प्रसन्नता हुई कि लेखों के एकत्रीकरण के लिए आपने बहुत परिश्रम किया है. ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ साहित्यकारों के अभिवचन एवं अभिस्तस्तवन भी प्रस्तुत किया है. विशेष है. मैं आपके श्रम और साहित्य निष्ठा की सराहना करती हूँ, अभिनंदन करती हूँ. अनेक बधाईयां. डॉ तारा सिंह के कर्तृत्व को देखकर श्रद्धा से नत मस्तक हो प्रणाम करती हूँ और कामना करती हूँ कि वे इसी प्रकार साहित्य सर्जना में रत रहें शतायुषी होवें. युवा पीढ़ी और हम सभी को प्रेरणा प्रोत्साहन एवं प्रेम प्रदान करती रहें. **डॉ० विद्या केशव चिटको**, समर्थनगर, नासिक

+++++++++++++++++++++

विश्व स्नेह समाज के ७५वॉ अंक मिला. ध न्यबाद. यह अंक जो डॉ० राज बुद्धिराजा को समर्पित है, अपने आप में पूर्ण ग्रन्थ बन गया है तथा उनके जीवन के हर पहलू को समेटे है. ऐसी महान लेखिका पर अंक निकालकर, विश्व स्नेह समाज खुद ही धन्य हो गया है.

अनुराग मिश्र'गैर',बुलन्दशहर, उ०प्र०

++++++++++++++++++++

लाओ भाषा जागरण, चिन्तन करो अपार।
हटे आंग्ल का आवरण,हिन्दी ले अधिकार।।
स्वीकारें शुभकामना, भेज रहा हूँ पत्र।
हिन्दी के शुभ दिवस का, स्वागत हो सर्वत्र।।
स्वागत हो सर्वत्र, हिन्दी को दें हियमान।
फिर भाषा अन्य पर, दें उचित मान-सम्मान।।
कह शिल्पी कविराव, सृजन साधना संवारे।
पाठकों के हो प्रिय, शुभ कामना स्वीकारें।।

मो०अंसार शिल्पी, मंझनपूर, कौशाम्बी

++++++++++++++++++++

'पुलिस गरीबो के लिए है'

श्रद्धेय द्विवेदी जी

लम्बे इंतजार के बाद आज पत्रिका का फरवरी-मार्च का अंक मिला. डॉ. तारा सिंह विशेषांक के रुप में प्रकाशित यह अंक पहले के अंको से बेहद खूबसूरत एवं पसंद आया. नारी के ऊपर पूरा अंक प्रकाशित करने के लिए साधुवाद. एक छोटा सा मेरा निवेदन है, अगर संभव हो तो स्वीकारने की कृपा करिएगा, यदि पन्नों की क्वालिटी में थोड़ा सुधार हो जाए तो पत्रिका देखने-पढ़ने में और आनंदानुभूति होगी. पिछली पत्रिका प्राप्त होने के चंद दिन बाद ही दूसरा अंक मिला. आभार. संपादकीय पुलिस विभाग का काम बदल गया है, मन से से पढ़ा. मैंने कुछेक थानों पर लिखा पढ़ा है 'पुलिस गरीबो के लिए है' अब आप अर्थ लगाते रहिए. जैसा चाहेंगे वैसा अर्थ निकलेगा. मेरा तो मानना है कि इस सुक्ति वाक्य पर पी.एच.डी. भी की जा सकती है. ऐसा नहीं की सारे पुलिस वाले ऐसे ही है लेकिन क्या करिएगा. पूरी चादर साफ-सुथरी क्यों न हो. अगर कहीं एक छोटी भी दाग लग गई तो निगाहें पूरी चादरपर नहीं बार-बार उसी दाग पर ही केन्द्रित होती है. ऐसे धब्बों को हटाने-मिटाने का कार्य पुलिस विभाग ही कर सकता है. आशा है पुलिस के आला अफसर आपकी संपादकीय पढ़ने के बाद इस ओर उचित कदम उठाने का प्रयास करेंगे.

अजय चतुर्वेदी कक्का, सोनभद्र, उ०प्र०

++++++++++++++++++++++

आपकी तारीफ हमने इन्दौर व कोटा में सुनी. आपकी पत्रिका की एक प्रति देखने की इच्छा थी. एक दो साल पूराने अंक हो तो भी चलेगा.

पं. बाबू लाल शर्मा गौतम, कोटा

++++++++++++++++++++

पत्रिका का अप्रैल ०८ अंक मिला. इसके लिए आपका हार्दिक धन्यवाद. पत्रिका में आलेख, रचनाएं, कविताएँ इत्यादि सारगर्भित है. आपकी साहित्य सेवा राष्ट्रीय स्तर पर हो रही है. आज के परिवेश में भारत में हिदी की दूरदशा हो रही यह सोचने का विषय है. बैंक, आयकर विभाग तथा सरकारी विभागों में सारा कार्य अंग्रेजी में हो रहा है, जबकि हिन्दी में होना चाहिए.

भैरु लाल नामा, बाड़मेर, राजस्थान

++++++++++++++++++++

पत्रिका वर्ष ७, अंक १२ मिला, धन्यबाद. अंक को मैं बड़े मनोयोग से पढ़ गया. हिन्दी भाषा और आरक्षण पर कुछ विशेष सामग्री मिली, कविताएँ भी अच्छी लगी. अन्य रचनाएं बडऋे काम की है.

अनुज प्रताप सिंह, अमेठी, उ०प्र०

+++++++++++++++++++++

प्रकाश पर्व दीपावली के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं, बधाई. दीपोत्सव आपके

जीवन पथ को पग-पग पर आलोकित करें.

संजय कुमार चतुर्वेदी, लखीमपुरी खीरी

++++++++++++++++++++

महोदय, सितम्बर का अंक प्राप्त हुआ, हार्दिक धन्यबाद. रचनाएं पढ़ी. दोनों कहानियां कोख, परदोष एवं लघुकथाएं अच्छी लगी. सच तो यह है कि पत्रिका की समस्त सामग्री पठनीय है. साहित्य से अलग हटकर यदि इन्हीं पत्रिकाओं से साहित्यकार से संबंधित समाचार प्राप्त हो जाते हैं तो प्रसन्नता होती है. निश्चित रुप से रचनाकार की रचना के साथ रचनाकारों की उपलब्धि यॉ पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहनी चाहिए. साथ-साथ साहित्यिक आयोजनों की रपट भी. आप यह सभी कार्य कर रहे हैं, इसलिए पुनः हार्दिक धन्यबाद. स्वस्थ एवं सुखमय जीवन की कामना करते हुए

श्याम नारायण श्रीवास्तव,रायगढ़,छग.

++++++++++++++++++++

आदरणीाय द्विवेदीजी को मेरा सादर नमस्कार आपको व संस्थान परिवार को मेरी ओर से नवरात्र एवं दीपावली की हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं

दीपोत्सव की पावन बेला
एक नया संकल्प लिए
रोशन हो हर घर आंगन
यही मधुर कामना लिए
हो नित नया सवेरा
एक नई ओंस की बूंद लिए.

पूरनमल गेहलोत , झालावाड़ राजस्थान

+++++++++++++++++++++

जुलाई ०८ का अंक प्राप्त हुआ. धन्याबाद. भ्रष्टाचार का वाईरस, डॉ. सुमी ओम शर्मा, तथा मिलावट का जहर-हितेश कुमार शर्मा, आलेख पढ़े. भ्रष्टाचार व मिलावट दोनो आपस में जुउ़े हुए है. पुरस्करों/सम्मानों की बाढ़ सीस आ गई लगती है. फिर भी हिन्दी ज्यों की त्यों है.

हिन्दी में न्याय के मुद्दे पर विधि आयोग जल्द ही कानून और न्याय मंत्रालय को रिर्पोट सौपेंगा.

डॉ. निर्मल सिंह,केन्द्रीय सचिवालय, हिन्दी परिषद, भा० रि० बैंक शाखा, नई दिल्ली-

++++++++++++++++++++++

पत्रिका का जुलाई ०८ अंक मिला. भ्रष्टाचार का वाइरस लेख बहुत अच्छा लगा. समाज की चेतना को झक झोरने वाला विषय है यह.

पं. नरेश कुमार शर्मा, संपादक, मुंबई की बाते, मुंबई

+++++++++++++++++++++++

पकड़ों और गोली मार दो.

पत्रिका का जुलाई०८ अंक मिला. आतंकवाद आज हमारे देश में ही नहीं, पूरे विश्व में फैलता जा रहा है. इसका जन्मदाता खुद इसकी चपेट में है. आपने आतंकवाद को समूल नष्ट करने के जो सुझाव दिया है उनमें से मात्र एक ही अपना लिया जाय तो आतंकवाद तो खत्म हो सकता है. वह है 'आतंकवादियों को कठोर से कठोर से दंड का प्रावधान करना' मेरी समझ से इसका मात्र एक ही निदान है-पकड़ों और गोली मार दो. कोई मुकदमा नहीं, कोई सफाई नहीं. जब तक डर पैदा नहीं होगा, आतंकियो को इसकी तरफ से मोड़ा नहीं जा सकता. हमारे देश में आतंकवाद बढ़ने का मुख्य वजह है-हमारे देश के राजनीतिज्ञों का ढुलमुल नीति. जब तक ये राजनीतिज्ञ इस आतंकवाद का शिकार नहीं होगे तब तक इसके सफाये की बात ही सोचना मूर्खता है. संसद भवन पर हमला हमारे देश के इतिहास में सबसे काला दिन था. यह बहुतत ही दुखद घटना थी लेकिन उससे भी दुखद बात ये हुई कि ये नेता मारे नहीं गये. अगर दो-चार भी मर जाते तो आज हमारे देश सें आतंकवाद जरुर समाप्त हो गया होता. डॉ.एन.एस.शर्मा ने ठीक ही लिखा है-'पाकिस्तान मुख्य आस्तिन का सांप है. ' संतोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी की चिन्ता हमारे केन्द्रीय सरकार की चिन्ताओं में शामिल होना चाहिए. डॉ. स्वर्ण किरण का आलेख अपनी भारतीय संस्कृति की याद दिलाता है. हितेश कुमार शर्मा ने समाज में व्याप्त मिलावट संबंधी जहर की ओर ध्यान आकृष्ट करके अच्छा काम किया है. लेकिन इसका निदान भी ढूंढना होगा वरना मिलावट का धंधा करने वाले ये लोग मानव समाज का ही अंत अपने मुनाफे के लिए कर देंगे. कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव की कहानी और लघु कथायें अच्छी लगी. काव्य खंड भी दमदार है.

पत्रिका में विभिन्न विधाओं की स्तरीय रचनाओं का समुचित समायोजन सम्पादकीय कौशल को दर्शाता है. इसकी निरंतरता एव दीर्घ जीवन की कामना के साथ.

डॉ० दिनेश प्रसाद शर्मा, भोजपुर, बिहार

+++++++++++++++++++++++

पत्रिका में विविध विधाओं की रचनाएं है

जुलाई अंक मिला. इतनी सुन्दर पत्रिका के सम्पादन/प्रकाशन के लिए धन्यबाद. पत्रिका में विविध विधाओं की रचनाएं है जिससे पाठकों को अपनी रुचि के अनुसार सामग्री पढ़ने को मिल जाती है. इसमें चार कहानियॉ रुचिकर है. अंक थोड़ा पीछे चल रहा है. खैर देर से आये दुरुस्त आये-यह प्रशंसनीय है. पत्रिका अनवरत निकलती रहे इसी कामना के साथ. **नरेश पाण्डेय 'चकोर'**, संपादक अंग माधुरी, पटना, बिहार

+++++++++++++++++++++++

पत्रिका का सितंबर अंक मिला. हिन्दीःकल आज और कल, राष्ट्रभाषा हिन्दी, आरक्षण आदि विषयों पर विचारोत्तेजक लेख पढ़ने को मिले. विश्व ग्राम का सपना ऑखों में लिए आम आदमी इन्सानियत खोज रहा है. सर्वहारा वर्ग वहीं का वहीं शोषण-समाप्ति की आस ऑखों में लिए व्यथित है. आज विश्व को शांति की आवश्यकता है उसके लिए जरुरी है नैतिक शिक्षा जो बचपन से ही बच्चे के मन में अंकुरित की जानी चाहिए. बच्चों को हम क्या दे रहे हैं? शायद परिपक्वता! समय से पूर्व परिपक्व होते बच्चे आतंक की भाषा सीखते हैं. इस दिशा में हमारे समाज को अवश्य कदम उठाना चाहिए ताकि विश्व स्नेहिल समाज में तब्दील हो सके.

अंजु दुआ जैमिनी, संपादक, पहचान पत्रिका, फरीदाबाद, हरियाणा

आत्मोत्सर्ग की भावना दीपत्सव को करे साकार
आओ गले लगे! शिकवे मिटें! प्यार को दें आकार
बॉटना छोड़ों एक दूसरे को! रहोगे सदाबहार
तिमिर भागता दूर दीवाली है राष्ट्रीय त्योहार

डॉ० वली उल्लाह खॉ फरोग, अजमेर, राज.

लघु कथांए

श्याम मनोहर व्यास, उदयपुर की लघुकथाए

रायल्टी

वह हिन्दी का अच्छा लेखक था, प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में उसकी रचनायें प्रायः छपती रहती थी. एक प्रकाशक ने उसकी प्रतिभा को पहचान कर उसकी एक पुस्तक प्रकाशित की.अपनी पहुँच के आधार पर प्रकाशक ने उस पुस्तक की सरकारी खरीद से अच्छा पैसा भी कमाया.

लेखक ने जब उससे रॉयल्टी की मॉग की तो प्रकाशक ने कहा-"भाई सा, हमने अपनी पुस्तक छाप कर आपको लेखक-जगत में प्रतिष्ठा दी है और मार्केट दिया है. क्या यह किसी रायॅल्टी से कम है?"

बेचारा लेखक मन मसोसकर रह गया. आखिर वह क्या करें? किससे फरियाद करें?

+++++++++++++++++++++++

आपकी कृपा

एक प्रदेश के मंत्रीजी सरकार का कार्यकाल समाप्त होने से कुछ समय पूर्व अपने चुनाव-क्षेत्र के बहुत ही गरीब धन्यबाद देने के उद्देश्य से उन्होंने कहा-"भाइयों, आज मैं जो कुछ भी हूँ, वह आप लोगों की कृपा के कारण ही है."

इतने में एक अर्द्धनग्न ग्रामीण खड़ा होकर बोला-"श्रीमान जी, आज हम लोगों की जो दशा आप देख रहे हैं, वह भी आपकी कृपा के कारण ही है" मंत्रीजी यह सुनकर निरूत्तर हो गये.

+++++++++++++++++++++++

नीयत

एक किसान के दो बेटे थे. पिता के निर्देशन में वे खेती-बाड़ी सम्भालते थे. सुखी परिवार था. सबमें प्रेम-भाव था. पिता की मृत्यु के बाद भी उनकें प्रेम बना रहा. दोनों की पत्नियॅा भी सगी बहिनों की तरह रहती थी. एक दिन बड़ा भाई गन्ने के खेत में से एक गन्ना काट लाया. उसने उसके दो टुकड़े किये. बड़ा टुकड़ा उसने अपने बच्चे को दिया और छोटा टुकड़ा पास में खड़े छोटे भाई के पुत्र को दिया. छोटा भाई दूर खड़ा यह कृत्य देख रहा था. वह बोला-"भैया, अब हमें बॅटवारा कर लेना चाहिए."

"क्यों? बड़ा भाई बोला."

"आपकी नीयत में दुर्भावना आने से भविष्य में पारिवारिक कलह मचे उससे पहले ही हमें खेत का बॅटवारा कर लेना चाहिए"

"क्यों?" बड़ा भाई बोला.

"आपकी नीयत में दुर्भावना आने से भविष्य में पारिवारिक कलह मचे उससे पहले ही हमें खेत का बॅटवारा कर लेना चाहिए." छोटा भाई बोला.

आखिर खेत व सम्पत्ति का बटवारा हो ही गया. बड़ा भाई मन ही मन समझ गया था.

+++++++++++++++++++++++

बॅटवारा

दो मित्रों ने गन्ने की खेती की. खेत तैयार होने पर बॉटने की बात चली तो भोले व सज्जन मित्र ने कहा-"भैया, तुम्ही बटॅवारा कर दो, जो दोगे वही ले लूंगा." चालाक दोस्त ने कहा-"गन्ने की जड़ का एक तिहाई भाग मैं ले लेता हूँ और ऊपर का दो तिहाई भाग तुम ले लो." उसने स्वीकार कर लिया.

भोला मित्र घाटे में ही रहा. सच है संसार में अधिक भोलापन व सज्जनता हानिकारक ही है.

संजय चर्तुर्वेदी 'प्रदीप', उ0प्र0 की लघुकथाए

अपराधो का ग्राफ

रामशरण जी जब से थाना प्रभारी बनकर आये, सबकी रिर्पोट लिखी जाने लगी, जनता बड़ी खुश थी. मासिक बैठक में कप्तान ने डाटते हुए कहा जबसे तुम उसे थाने को गये हो, अपराध काफी बढ़ रहे है, तुम अपराधों को रोकने में अक्षम रहे हो इसलिए तुम्हें निलम्बित किया जाता है.

वीर सिंह को वहां का थाना प्रभारी बनाया जाता है. अब थाने में किसी की रिर्पोट ही नहीं लिखी जाती थी. अगली मासिक मीटिंग में कप्तान साहब अपराधों का ग्राम कम होने की वीर सिंह को बधाई दे रहे थे.

+++++++++++++++++++++++

नाटक

हमारे पड़ोसी शुक्ला जी कई दिन से कह रहे थे मेला में नाटक बहुत बढ़िया हो रही है. कल देखने चलेगें आपभी साथ में चलना. कल जब मैं तैयार होकर शुक्ला जी के घर गया तो वह टी.वी. देख रहे थे. हमने कहा आप मुझे मेला में नाटक देखने चलने का निमंत्रण दे आये थे, लेकिन आप खुद टी.वी. देख रहे है. शुक्ला जी ने कहा-टी.वी. पर संसद की कार्यवाही का सीधा प्रसारण आ रहा है. अब मेला में नाटक देखने क्या चलना. संसद की कार्यवाही क्या किसी नाटक से कम है.

+++++++++++++++++++++++

अन्तर

सेठ काशीनाथ शहर के प्रतिष्ठित व्यापारी थे. कई सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाओं से भी सम्बद्ध थे. एक बार सीढ़ियों से उतरते समय पैर में कुछ मोच आ गई तो जिला अस्पताल में भर्ती हुए. अस्पताल के सारे डाक्टर व स्टाफ सेवा में उनकी कृपा पाने के लिए जुट गया, लगभग शहर के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति हाल पूॅछने अस्पताल आये.

वहीं एक बुढ़िया के बेटे का दुर्घटना में पैर टूट गया था, वह बेचारी अपने बेटे के लिए डॉक्टरों के आगे हाथ जोड़ती गिड़ गिड़ाती घूम रही थी कि कुछ दवा उसके बेटे की भी हो जाए, लेकिन उसका हाल पूछने वाला कोई नहीं था. एक नर्स जो बड़ी उदार तथा धार्मिक थी उसने डाक्टर से कहा आपके लिए सभी मरीज समान है, कृपया उस बुढ़िया के लड़के को भी देख ले. डाक्टर ने कहा, अरे सेठ शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति है कहां उस बुढ़िया का लड़का दोनों में जमीन आसमान का अंतर है.

नर्स डाक्टर के व्यवहार से हतप्रभ सी कभी डाक्टर को तो कभी दर्द से कराह रहे बुढ़िया के बेटे को देख रही थी.

कृपया पत्रिका की प्रति मांगते वक्त वक्त ५ रुपये का टिकट साथ में भेजना न भूले. अन्यथा पत्रिका मुफ्त नहीं भेजी जाएगी संपादक

जानकारी

टीपू ने किया था रॉकेट का आविष्कार

■ अंग्रेजों के खिलाफ दो सौ साल पहले हुआ था इस्तेमाल

श्रीरंगपट्टम, कर्नाटक. भारत ने बौद्ध और जैन धर्म के जरिए दुनिया को शांति का संदेश दिया और विश्व को शून्य के आविष्कार से परिचित कराया. लेकिन अब तक हम इस बात से अनजान थे कि रॉकेट तकनीक का जन्म स्थान भी भारत ही है. इसका आविष्कार करने वाला कोई और नहीं बल्कि १७९२ में श्रीरंगपट्टनम के युद्ध में अंग्रेजों को शिकस्त देने वाले टीपू सुल्तान थे. रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) में रक्षा और विकास के मुख्य नियंत्रक ब्रह्मोस एयरोस्पेस परियोजना के प्रबंध निदेशक ए.एस. पिल्लई ने श्रीरंगपट्नम का दौरा करने के बाद कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत रॉकेट निर्माण का जन्म स्थान है.

दरअसल मैसूर के एक पत्रकार ने तत्कालीन राष्ट्रपति रहे ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को पत्र लिखकर दी थी. इसके बाद ही कलाम ने पिल्लई को श्रीरंगपट्नम जाकर रॉकेट निर्माण में टीपू के योगदान की जांच करने को कहा. पिल्लई ने संवादाताओं से कहा कि मैसूर टाइगर ने पहली बार अंग्रेजों के खिलाफ दो सौ साल पहले रॉकेट का इस्तेमाल किया था. उन्होंने कहा कि २५०एमएम के रॉकेट में दो किलो बारूद रखा जाता था और उसे निर्देशित किया जाता था. उसकी मारक क्षमता १.५ से २ किलोमीटर थी. पिल्लई ने कहा कि यहीं से रॉकेट तकनीक की शुरुआत हुई. आश्चर्यजनक है कि उनके दिमाग में रॉकेट निर्माण की बात कैसे आई.

उन्होंने कहा कि अब हम दुनिया को बताएंगे कि रॉकेट तकनीक के जनक हम हैं. हमने जो यहां देखा है उसे राष्ट्रपति को बताउंगा क्योंकि वे खुद भी रॉकेट के वैज्ञानिक है. पिल्लई अग्नि, पृथ्वी, नाग, त्रिशूल और आकाश मिसाइलों के विकास कार्यक्रम से जुड़े रहे हैं. टीपू के रॉकेट में स्टील का चैंबर होता था और उसमें बारुद रखा जाता था. आज भी रॉकेट का सालिड मोटर ठीक वैसा ही दिखता है. उन्होंने कहा कि मैसूर टाइगर ने जिस लांचिंग पैड का निर्माण किया था वहां से एक साथ तीन रॉकेट छोड़े जा सकते थे.

इसे पढ़कर हॅसना मना है?

<u>एक बार</u> एक राज्य के मुख्यमंत्री जनता को संबोधित करते हुए कह रहे थे कि भाइयों हम राज्य को भारत का स्विटरजरलैंड बना देगें.

तभी भीड़ में से किसी की आवाज आई-चलों अच्छा हुआ, अब काला धन जमा करने के लिए स्विस बैंक जाने की जरुरत नहीं पड़ेगी. यहीं खाता खुलवा लेंगें.

<u>मेहमान</u>-आपके साथ बैठे कब एक घंटा बीत गया, बातों ही बातें में पता ही नहीं चला.

मेजबान-एक घंटा? जनाब, आपको यहां आए तीन घंटे बत्तीस मिनट और छियालिस सैकंड बीत चुके है.

<u>एक लड़की</u> ने नया-नया कुत्ता पाला. वह बाजार से उसके लिए एक कटोरा खारीदने गई. दुकानदार ने तमीज दिखाते हुए कहा कि अगर यह कटोरा आपके कुत्ते के लिए है तो मैं मुफ्त में उस पर आपके कुत्ते का नाम लिख देता हूँ ताकि कोई दूसरा इसके कटोरे का इस्तेमाल न कर सके.

नहीं, इसकी कोई जरुरत नहीं है, न तो मेरा कुत्ता पढ़ा लिखा है और न ही मेरे डैडी कटोरे से पानी पीते है.

<u>एक सज्जन</u> दुनिया की सैर पर निकले. किसीस देश के हवाई अड्डे पर अफसर उसका पासपोर्ट देखते हुए बोला, पासपोर्ट में लगी आपकी तसवीर से तो यह मालूम होता है कि आप गंजे है. पर आपके सिर पर बाल हैं. इसका मतलब हुआ कि यह पासपोर्ट नकली है.

वह सज्जन बोले-आपको भ्रम हुआ है. पासपोर्ट नहीं, बल्कि मेरे बाल नकली है.

<u>संता ग्राहक</u>(बंता सुनार से)-आपने अपनी दुकान में इस कदर ठंडक क्यों कर रखी है.

बंता सुनार-'इसलिए कि गहनों की कीमत सुन कर ग्राहकों को पसीना न आए.

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नामः श्री सीताऽयण
रचनाकारः पंडित नरेश कुमार शर्मा
कीमतः१०१ रुपये
सम्पर्कः सी-८०३, सेटेलाइट पार्क गुफा मार्ग, जोगेश्वरी(पूर्व), मुंबई-४०००६०

प्रस्तुत दोहा सतसई में कुल २७ शीर्षकों के अन्तर्गत ७६० दोहे है. लगभग सभी दोहे अच्छे बन पड़े है. रचनाकार भारतीय जीवन पद्धति की विभिन्न पहलुओं को अपने दोहो में उजागर किया है. प्रस्तुत कुछ दोहे-

भारत में खुश रह रहे, सभी धर्म के लोग।
सब को पूरी मान्यता, आपस में सहयोग।।
भाई चारा है बना, है आपस में प्यार।
नोंक झोक चलती मगर, बना रहे व्यवहार।।
जो भी आत पास में लेता भाई मान।
हिन्दू धर्म इसी तरह, बॉटे सारा ज्ञान।।
ऋषि मुनियों का देश यह, पूरा मानव ज्ञान।
अच्छी राह बना गये, दिया भली सन्तान।।
गलत काम के वास्ते मिलते लोग हजार।
अगर सही कुछ काम हो, नहीं रहे तैयार।।
जाति धर्म को भूल कर, आपस में रख प्यार।
लगता पूरा देश तब, एक बड़ा परिवार

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि सभी दोहे पठनीय व एक अच्छा संदेश देने वाले है।।

उपन्यासः सरकारी बेटी
पताः मदन सिंघल, अग्रसेन शिक्षा संस्थान, शिलोंगपट्टी, फुलवाड़ी, सिलचर, कछार-७८८००४, असम

लेखक का मन लोकतंत्र के चारों स्तम्भों के जर्जर होने पर अत्यंत दुःखी है इसीलिए इन चारों स्तम्भों को मानवता के नाम पर पुनर्स्थापित करने तथा अपने दायित्वों से देशभक्ति का पाठ पढ़ाने में अपनी कथनी व करनी का बराबर इस्तेमाल करवाने का प्रयास है. इस उपन्यास की नायिका पॉच साल से १६ साल की एक लड़की चन्द्रिमा की इर्द-गिर्द भयानक सच को एक यादगार, ऐतिहासिक एवं प्रेरणादायक बनाने का सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, व्यावसायिक तथा रोमांचकारी धारावाहिक उपन्यास है. लेखक का विश्वास है कि शोले के बाद भारत की बड़ी तथा एक ही गॉव में बनने वाली सामाजिक फिल्म बनायी जा सकती है। चाहें तो इसे धारावाहिक के रूप में टुकड़ों में भी फिल्माया जा सकता है.

इस उपन्यास में कई चौकाने वाले तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं, जो आम जीवन में कभी-कभार ही घटित होते हैं. किन्तुं अस्वाभाविक व गुमराह करने वाली घटना नही हैं. इस उपन्यास में कोरे सपने नहीं दिखाये गये हैं, न ही इसमें रहस्य के रुप में ही साक्ष्य ही छिपाये गये हैं. लेखक हास्य रस का कवि होने के नाते इसमें ममता, मानवता, हास्य, दर्द, रस व सभी कोणों को बड़ी सुक्ष्मता से संजोया है ताकि पाठक/दर्शक को शिकायत का मौका नहीं मिले. लेखक की हार्दिक इच्छा है कि इस उपन्यास की प्रतियॉ न्यायालयों, पुलिस थानों, पत्रकारों व राजनीतिकों तक पहुँचे, लेकिन उपन्यास पढ़ने का समय शायद ही इन लोगों के पास हो इसलिए इस पर लघु अथवा बड़े पर्दे की फिल्म बने, जिससे ज्यादा से ज्यादा लोगों तक लेखक की सोच पहुँच सके. न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका एवं मीडिया का नैतिक साफ-सुथरा चरित्र किस तरह देश का नक्शा बदल सकता है यही इस उपन्यास का सार है।

पुस्तक का नामःयुग के विचारकों से
कविः बदरी विशाल
समीक्षकः विजय कुमाार तन्हा

साहित्यकार का चिन्तन जब काव्यात्मक मार्ग से होकर पुस्तक रुप में सामने आता है तब वही चिन्तन समाज के लिए आईना साबित होता है. एक कुसाग्र साहित्यकार की दृष्टि मात्र कुछ विसंगतियों पर ही न ठहरकर समूचे विश्व पर चलायमान रहते हुए जल-थल और जनमानस का चिन्तन करती है. जो समाज और देश के उज्जवल भविष्य हेतु प्रेरणास्प्रद होता है.

ऐसे ही चिन्तन मनन में साधनारत साहित्य पुरोधा है श्री बदरी विशाल जी जो अपने काव्य संग्रह 'युग के विचारकों से' के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व की कई विषम समस्याओं को काव्य रुप में सबके सम्मुख रखते हुए युग के विचारकों से जबाब और हिसाब यूं मांग रहे है-

युग के विचारकों वैज्ञानिकों ओ नेताओं,
ओ बुद्धिजीवियों देना है तुमको जबाब।
इन युद्धों में तुम सब का कितना हिस्सा है,
है कसम तुम्हें सच बतलाना करके हिसाब।।

आज के इस माहौल में कवि घुटन सी महसूस करता है और उसका चिन्तन देश पर होता है.

अलगाववाद की लपटों को हम शान्ति नहीं यदि कर पाये
तो यह लपटें लेंगी लपेट बढ़ भारत की आजादी को।

आज का समाज पग-पग पर दूषित होता जा रहा है. आदमी आदमी के पथ पर शूल बोता चला जा रहा है और चिन्तन मनन काफी बौना होकर पथभ्रष्ट लोगों का यशोगान कर निज स्वार्थ सिद्धि तक सिमटता देख श्री विशाल जी लिखते

है-

सूर भी करने लगे हैं कंस गायन
और तुलसी लिख रहे हैं रावणायन,
आज कबीरा सिर्फ अपनी खैर मॉगे
आदमी औ आदमी में बैर मॉगे।।

यदि साहित्यकार का रुझान अध्यात्मिकता की ओर भी है तो सोने पर सुहागा होता है तो फिर रचनाओं में पीर पैगम्बरों का स्मरण भी स्वाभाविक है. इसी प्रकार शारदे पुत्र श्री बदरी विशाल जी भी एक रचना से देवत्व सम्बोधन में कहते है-

सृजन तुम्हारे झुलस न जाये देव! एटमी अंगारो से।

कवि का विश्व चिन्तन यहॉ पर उसके हृदय की वेदना को स्पष्ट दर्शाता है-

ईशा, हजरत, राम कृष्ण को फिर से भेजो।
देव! विश्व में मानवता मरने वाली है।

अध्यात्मिकता में आकंण्ठ डूबा कवि ही जाति-पाति के भेद भाव और भाषा भेद से दूर रहकर सम्पूर्ण मानव जाति के भले की दुआ मांगता है. विश्व शांति भाईचारा और एकता से परिपूर्ण यह ८४ पृष्ठीय काव्य संग्रह जनमानस में मानवता का संचार पैदा करते हुए प्रेरणा प्रदान कराता है. इस संग्रह में कविता और गीतों के माध्यम से बहुत से ऐसे झकझोर देने वाले अनछुए पहलुओं पर कवि ने कलम चलाकर इस संग्रह को अनूठा बना दिया है.

संग्रहः मेरा तन इण्डिया देख लो

रचनाकारः महेश चन्द्र 'राही'

पताः ए-१७, सरदार पटेल मार्ग, आमडीह, शहडोल, म.प्र. ४८४७७१

६४ पृष्ठीय इस संग्रह में राष्ट्रीय गीत, मुक्तक एवं ग़ज़लों का संग्रह है.

स्वतंत्रता तो मेरे इंडिया की बड़ी शान है,
उसका दिल तो रो रहा कि वह अभी गुलाम है।

++++++++++++++++++++++++

गॉधी के स्वप्नलोक का बजूद न बेचों।
बेटो तुम मेरे मॉग की सिंदूर न बेचो।।

++++++++++++++++++++++++++++

पालो इस सुत इक सूता, वृक्ष लगाओ पॉच।
अर्जित विद्या धन करो, न हीरा न कॉच।।

कुछ ऐसी पंक्तिया है जो मुझको प्रभावित करती है, हो सकता है आपको भी प्रभावित करें.

इनके अतिरिक्त निम्न शीर्षकों की रचनाएं भी प्रभावशील है-जननी समान है जन्मभूमि, जतन से ये रखना वतन, बेटों अहसान को मत भूलो, क्यों नफरत की गठरी सर पर रखते हो, सारा जमाना जल रहा है, कलम का सम्मान करना सीख लो, मॉ बाप को मत भूलना. रचनाकार को हार्दिक बधाई

++++++++++++++++++++++++++++++++++

कहॉनी संग्रह का नामः उनका मन

लेखकः देवेन्द्र कुमार मिश्रा

संपर्क सूत्रः जैन हार्ट क्लीनिक के सामने, एस.ए.एफ. क्वार्टस, बाबू लाईन, परासिया रोड, छिंदवाड़ा, म.प्र. ४८०००१

प्रकाशकःमेघ प्रकाशन,
२३६, गली कुंजस, दरीबाकला, चांदनीचौक,
दिल्ली-११०००६

प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें

अपने काव्य संग्रह, कहॉनी संग्रह, आलेख संग्रह आदि प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षणः

१.मात्र लागत मूल्य पर
२.विक्री की व्यवस्था
३.प्रचार प्रसार की व्यवस्था
४.विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें:

प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद—211011
इमेलः sahityaseva@rediffmail.com

प्रस्ताव आमंत्रित है

सम्मानित प्राधानाचार्य/प्राचार्य

महोदय,

हिंदी के विकास के लिए पूर्ण रुपेण सक्रिय विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद अपने कार्य क्षेत्र को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष से प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को सम्मानित करने का निर्णय लिया है. इसमें आपसे आपके विद्यालय /महाविद्यालय में वर्ष २००८ की परीक्षा में हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं के अंक पत्र, उनका नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित प्रति के साथ १० जनवरी २००९ तक आमंत्रित है. सम्मान समारोह फरवरी ०९ में प्रस्तावित है. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पांच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. आशा है आप हमारे आग्रह को स्वीकार कर अपना प्रस्ताव हमें शीघ्र भेजने का कष्ट करें. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में साहित्य उदय सम्मान व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी.

राज्य स्तरीय बाल काव्य प्रतियोगिता

सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश से ऐसे छात्र/छात्राएं जो हिंदी में कविता, ग़ज़ल, दोहा आदि लिखने का शौक रखते हों, उनसे अपनी एक कविता जिसे काव्य पाठ करना चाहते हो, एक फोटो व एक टिकट लगा पता लिखा जवाबी लिफाफा आमंत्रित है। प्रतिभागी की उम्र १५ वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए. १० वर्ष से कम उम्र के छात्र किसी दूसरे की कविता भी पढ़ सकते हैं उनका प्रस्तुतीकरण देखा जाएगा। यह प्रतियोगिता फरवरी ०९ में इलाहाबाद में आयोजित की जाएगी. विस्तृत जानकारी बाद में प्रेषित की जाएगी। प्रेषण की अंतिम तिथि १० जनवरी २००९ है।

प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले को सम्मानित किया जाएगा, उपहार सामग्री, प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया जाएगा।

अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव निम्न पते पर प्रेषित करें:

सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान
एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
email: sahityaseva@rediffmail.com Mo.: (O) 09335155949,

सम्पर्क व्यक्तिः

ईश्वर शरण शुक्लः सचिव, युवा शाखा: 09935174869
कृष्ण गोपाल श्रीवास्तवः संयुक्त सचिव, युवा शाखा: 09936834672
अशोक कुमार गुप्ताः स्नेहाश्रम सचिव, युवा शाखा: 09935157849
एस.के.तिवारीः कार्यसमिति सदस्य, युवा शाखा: 099

भारत सरकार एवं यू.जी.सी द्वारा मान्यता प्राप्त

जिसस क्राइस्ट रिजनल पालिटेक्निक

जेल रोड पॉवर हाउस के पास, अंधा खाना, नैनी, इलाहाबाद-२११००८

प्रवेश प्रारम्भ

- तीन वर्षीय डिप्लोमा प्रोग्राम
- डिप्लोमा इन सिविल इंजीनियरिंग
- डिप्लोमा इन मेकेनिकल इंजीनियरिंग
- डिप्लोमा इन इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग
- डिप्लोमा इन इलेक्ट्रानिक्स एण्ड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग
- डिप्लोमा इन कम्प्यूटर सांइस

विशेष

- आई.टी.आई. एवं इंटर मैथ के छात्र/छात्राओं को सीधे तीसरे सेमेस्टर में प्रवेश
- आकर्षक एवं सुसज्जित कम्प्यूटर लैब, पुस्तकालय, भौतिकी/रसायन प्रयोगशाला, मैकेनिकल एवं इलेक्ट्रिकल प्रयोगशाला
- योग्य, अनुभवी तथा प्रशिक्षित फेकेल्टी

सम्पर्क समयः प्रातः १० बजे से अपरान्ह ४ बजे तक

सम्पर्क करें:

श्री एल.एम.पाल
कंट्रोलर, 9919095574

श्री प्रभाकर द्विवेदी
सेन्टर मैनेजर
9369389136, 9415128575

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी—93,नीम सराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित किया. **डाक पंजीयन संख्याः** एडी.306/2006—08 R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380 **संपादकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी